RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

उसूलों पर जहां आंच आए टकराना जरूरी है, जो जिन्दा हो तो फिर जिन्दा नजर आना जरूरी है।

वसीम बरेलवी

वर्ष-08, अंक - 39 (साप्ताहिक) खवासा, गुरूवार 16 जुलाई 2026 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

झाबुआ के नन कांड की यादें ताजा कर गया बोरी में हुआ डकैती और दुष्कर्म का मामला

नन कांड के बाद हिल गई थी दिग्विजय सरकार, मगर बोरी कांड के बाद सरकार और भोपाली गलियारों में नहीं दिखी कोई हलचल

माही की गूंज, झाबुआ।

संजय भटेवरा

वैसे तो झाबुआ-आलीराजपुर आदिवासी बाहुल जिलों में चोरी, डकैती और बलात्कार के कई मामले सामने आते रहते है। लेकिन इन मामलों में ऐसे बहुत कम ही होते है जिससे सरकार और तंत्र डामाडोल हो जाए। ऐसे मामलों में राजनीतिक सूर बदल जाते है और घटना स्थल तक राष्ट्रीय राजनीति और राजनेता खाक छानते नजर आते है। दबाव वश स्थिति यह हो जाती है कि, स्थानीय प्रशासन और पुलिस की रातो की नींद हराम हो जाती है। मगर इसके विपरीत इन्ही आदिवासी जिलों में कई मामले ऐसे भी होते है जो कभी प्रकाश में नहीं आते। पुलिस, प्रशासन और राजनीतिक दल इस तरह खामौशी अपना लेते कि मानों कुछ हुआ ही नहीं है। कई दुष्कर्म पीड़ितों की आवाज इन जिलों में घुटकर दम तोड़ देती है। मगर जब कोई मामला जघंन्य होकर जनआक्रोश का कारण बनता है तो फिर उसकी आवाज दूर-दूर तक सुनाई देने लगती है।

अभी हाल ही में आलीराजपुर जिले के बोरी थाना क्षेत्र में हुई एक घटना ने सबको झकझोर कर रख दिया। बोरी थाना क्षेत्र में एक विधवा महिला के साथ हुई डकैती, सामूहिक दुष्कर्म और अमानवीय बर्बरता ने क्षेत्र में जन आक्रोश पैदा कर दिया। कई संघ, संगठनों ने इस घटना को लेकर विरोध दर्ज करवाया। आक्रोश रैली निकाली गई, नगर बंद का आव्हान किया गया। पुलिस और प्रशासन के सुस्त रवैये को लेकर भी सवाल खड़े किए। पुलिस और प्रशासन पर जमकर दबाव बनाया गया। तब कहीं जाकर दबाव में आए पुलिस और प्रशासन ने एक्शन मोड में आने का विचार बनाया। पुलिस ने भारी दबाव झेलते हुए आरोपियों में से कुछ को गिरफ्तार कर लिया। लेकिन अब भी कई आरोपी पुलिस गिरफ्त से दूर नजर आ रहे है।

बोरी क्षेत्र में घटी इस घटना ने झाबुआ जिले में घटित हुए नन कांड की यादों को ताजा कर दिया। नन कांड सितंबर 1998 में झाबुआ जिले में हुआ एक बेहद दुखद और बहुचर्चित सामूहिक बलात्कार व डकैती का मामला था। इस घटना ने देश-विदेश में भारी आक्रोश पैदा किया था। यह वारदात 22-23 सितंबर 1998 की रात को झाबुआ जिला मुख्यालय से लगभग 25 किमी दूर कल्याणपुरा थाना क्षेत्र का नवापाड़ा-भंडारिया गांव (प्रीति शरण सेवा केंद्र) के एक कॉन्वेंट मिशन सेंटर में हुई थी। घटना दिनांक को देर रात कुछ हथियारबंद लोग एक बीमार बच्चे के इलाज के बहाने कॉन्वेंट पहुंचे थे। दरवाजा खुलते ही करीब 20से 26 आदिवासी युवकों का समूह अंदर घुस गया और परिसर में जमकर लूटपाट की। हमलावरों ने वहां मौजूद चार कैथोलिक ननों (सिस्टर्स) के साथ सामूहिक बलात्कार जैसी घिनौनी वारदात को अंजाम दिया था। पुलिस ने इस मामले में 20 से 30 वर्ष की उम्र की चार ननों की शिकायत पर मामला दर्ज किया था। मामले में कुल 26 आरोपी बनाए गए थे। इस मामले में कई आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। हालांकि कुछ आरोपी लंबे समय तक फरार रहे। मामले के आखिरी फरार आरोपियों में से एक को पुलिस ने घटना के लगभग 21 साल बाद, मार्च 2019 में गिरफ्तार किया था। 1998 में हुए इस नन कांड की गूंज देश -विदेश तक पहुंची थी और लोगो में इसे लेकर बहुत आक्रोश देखने को मिला था। परिणाम स्वरूप तत्कालीन सरकार और राजनेताओं ने दिल्ली और भोपाल से लेकर झाबुआ तक की खाक छानी थी। जिले में हुई यह घटना इतनी गंभीर थी कि बड़े-बड़े राजनेताओं को यहां तक आने पर मजबूर कर दिया था। या यूं कह लें कि जनआक्रोश को देखते हुए सत्ता और विपक्ष दोनों ही दलों के नेताओं में खलबली मच गई थी।

3 आरोपियो का पुलिस ने निकाला जुलुस।

झाबुआ जिले के इस नन कांड के बाद शायद ही क्षेत्र में ऐसी कोई दूसरी घटना देखने को मिली, लेकिन आलीराजपुर जिले के बोरी थाना क्षेत्र में पिछले दिनों घटी यह घटना झाबुआ जिले के नन कांड से काफी हद तक मेल खाती दिखाई दे रही है। यह घटना 10 जुलाई 2026 की रात को आलीराजपुर जिले के बोरी थाना क्षेत्र में हुई। जहाँ 8 से 10 हथियारबंद बदमाश डकैती के इरादे से एक घर में घुस गए थे और उन्होंने एक आदिवासी विधवा महिला के साथ बर्बरतापूर्ण सामुहिक दुष्कर्म किया। महिला घर में अकेली थी क्योंकि उसके पति का निधन हो चुका था और बच्चे बाहर गए हुए थे। बदमाशों ने चांदी के गहनों और नकदी की तलाश में पूरे घर में तोड़फोड़ की और जमीन तक खोद डाली। बदमाशों ने महिला को बंधक बनाकर उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया और उसके गुप्तांग में लकड़ी डालकर गंभीर रूप से घायल कर दिया।

इस घटनाक्रम के बाद क्षेत्र की जनता में भारी आक्रोश देखने को मिला। घटना के विरोध में जन आक्रोश रेली, वाहन रेली निकाली गई। घटना की गंभीरता और जनआक्रोश के चलते बोरी नगर बंद भी रखा गया। जब प्रशासन पर जनआक्रोश का दबाव बना और आमजन पुलिसिया सुरक्षा इंतजाम पर सवाल खड़े करते दिखाई दिए। क्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठाए गए और थाना टीआई के खिलाफ आक्रोश जताते हुए हटाने की मांग की गई। एसपी आलीराजपुर ने जांच के बाद हटाने का आश्वासन भी दिया। जिसके बाद जनता का आक्रोश कम हुआ और विरोध प्रदर्शन समाप्त हुआ। स्थिति को देखते हुए पुलिस और प्रशासन हरकत में आए और त्वरित कार्रवाई करते हुए नामजद आरोपियों को गिरफ्तार किया है और बोरी बाजार में उनका सार्वजनिक जुलूस निकालकर कड़ा सबक भी सिखाया है। हालांकि इस मामले से जुड़े अन्य आरोपी अभी पुलिस गिरफ्त से बाहर दिखाई दे रहे है। लेकिन उम्मीद है कि वे भी जल्द ही पुलिस की पकड़ में होंगे।

अब सवाल यह उठता है कि, नन कांड और बोरी कांड में काफी समानताएं होने के बावजूद बोरी का मामला देश तो छोड़िए प्रदेश भर में भी प्रकाश में नहीं आया। हालांकि घटना के बाद आलीराजपुर जिले के स्थानीय नेता जरूर घटना स्थल पर दिखाई दिए। प्रदेश सरकार की ओर से आलीराजपुर विधायक और प्रदेश सरकार में मंत्री पद पर काबिज नागरसिंह चौहान जरूर दिखाई। इसे बहुत बड़ी बात या प्रदेश सरकार का कदम तो नहीं कहा जा सकता क्योंकि नागरसिंह चौहान खुद आलीराजपुर से विधायक है और उनकी पत्नि अनिता नागरसिंह चौहान रतलाम संसदीय सीट से सांसद है। सो उनका इस घटना के बाद मामले की जानकारी और सांत्वना के लिए पहुंचना स्थानीय स्तर पर देखा जा रहा है। हालांकि मंत्री होने के नाते नागरसिंह चौहान ने मुख्यमंत्री से मुलाकात कर घटना की जानकारी दी और मुख्यमंत्री ने भोपाल से बैठे-बैठे ही आर्थिक सहायता पहुंचा दी। इसके अलावा इतने जघन्य कांड के बादवजूद सरकार और भोपाली गलियारों में कोई खास हलचल देखने को नहीं मिली। बोरी में हुई इस घटना के बाद कई संगठन और विपक्ष पीड़िता को न्याय के लिए आंदोलन और आक्रोश व्यक्त करते जरूर दिखाई दिए। सिक्के के दूसरे पहलू पर चर्चा करने वाले बताते है कि, खुद सरकार ने इस मामले को जानबूझ कर दबाया है ताकि सरकार और उसकी सुरक्षा व्यवस्था पर किसी तरह का प्रदेश में कोई बबाल न हो। जबकि 1998 में हुए नन कांड पर बात करें तो प्रदेश में कांग्रेस की सरकार थी और विपक्ष इतना हावी था कांग्रेस की दिग्विजय सरकार हिल गई थी। दोनों ही मामलों में समय के साथ बहुत ही बड़ा उलट फैर परिस्थितियों में दिखाई दे रहा है। या फिर 1998 में घटित नन कांड ईसाई ननों के साथ हुआ था इसलिए ततसमय यह स्थितियां बनी थी और अब वर्तमान में बोरी क्षेत्र में हुई घटना एक आदिवासी विधवा महिला के साथ हुई है इसलिए इसे इतने तवज्जो नहीं मिल सकी।

पंजाब कांग्रेस में घमासान पर सक्रिय हुए राहुल गांधी

नई दिल्ली।

विदेश दौरे से लौटने के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी पंजाब कांग्रेस में चल रहे नेतृत्व विवाद को लेकर सक्रिय हो गए हैं। उन्होंने मंगलवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के साथ महत्वपूर्ण बैठक कर राज्य में बढ़ते संगठनात्मक मतभेद और आगामी विधानसभा चुनावों की तैयारियों पर चर्चा की। बैठक में कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल भी उपस्थित रहे।

सूत्रों के अनुसार पंजाब कांग्रेस में चल रही गुटबाजी और असंतोष को देखते हुए पार्टी नेतृत्व ने राज्य प्रभारी एवं छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को दिल्ली बुलाया है। भूपेश बघेल बुधवार को कांग्रेस नेतृत्व से मुलाकात कर पंजाब के राजनीतिक हालात और विभिन्न नेताओं से हुई चर्चाओं की विस्तृत जानकारी देंगे।

बताया जा रहा है कि राहुल गांधी राज्य के सभी प्रमुख नेताओं की राय जानने के पक्ष में हैं और विधानसभा चुनाव से पहले संगठन में एकता बनाए रखना चाहते हैं। पार्टी नेतृत्व का मानना है कि आंतरिक मतभेदों और गुटबाजी के साथ चुनाव लड़ना कांग्रेस के लिए नुकसानदायक साबित हो सकता है। इसी कारण विवाद को जल्द समाप्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

पंजाब कांग्रेस में असंतोष का मुख्य कारण अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पद पर बनाए रखने का निर्णय माना जा रहा है। इस फैसले का पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी, पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखजिंदर सिंह रंधावा और विधानसभा में कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रताप सिंह बाजवा सहित कई वरिष्ठ नेताओं ने विरोध किया है। इन नेताओं का मानना है कि चुनाव से पहले संगठनात्मक बदलाव आवश्यक है।

इधर, भूपेश बघेल ने हाल ही में पंजाब का दौरा कर पार्टी के विभिन्न गुटों और वरिष्ठ नेताओं से अलग-अलग मुलाकात की तथा संगठन की जमीनी स्थिति का आकलन किया। उन्होंने अपनी प्रारंभिक प्रतिवेदन कांग्रेस नेतृत्व को सौंप दिया है और अब दिल्ली में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करेंगे।

पार्टी सूत्रों के अनुसार भूपेश बघेल की रिपोर्ट और राहुल गांधी तथा मल्लिकार्जुन खड़गे के बीच हुई चर्चा के आधार पर पंजाब कांग्रेस में नेतृत्व और संगठन को लेकर आगे की रणनीति तय की जाएगी।

भारतीय मूल के अनिल मेनन अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए रवाना

नई दिल्ली।

भारतीय मूल के नासा के अंतरिक्ष यात्री अनिल मेनन मंगलवार को कजाकिस्तान स्थित बैकोनूर अंतरिक्ष प्रक्षेपण केंद्र से सोयूज एमएस-29 अंतरिक्ष यान के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए रवाना हुए। उनके साथ रूसी अंतरिक्ष यात्री प्योत्र डुब्रोव और अन्ना किकिना भी इस मिशन का हिस्सा हैं।

अंतरिक्ष यान का प्रक्षेपण भारतीय समयानुसार रात 8 बजकर 17 मिनट पर किया गया। पृथ्वी के दो चक्कर लगाने के बाद यह रात 11 बजकर 56 मिनट पर स्वतः अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के प्रिचाल मॉड्यूल से सफलतापूर्वक जुड़ गया। यह अनिल मेनन की पहली अंतरिक्ष यात्रा है, जबकि उनके दोनों रूसी सहयोगी पहले भी अंतरिक्ष मिशनों में शामिल हो चुके हैं।

प्रक्षेपण के दौरान अनिल मेनन की पत्नी अन्ना विल्हेम, परिवार के सदस्य तथा नासा प्रशासक जेरेड आइजैकमैन बैकोनूर अंतरिक्ष प्रक्षेपण केंद्र में मौजूद रहे। सभी ने इस अवसर पर अनिल मेनन और उनके साथियों का उत्साहवर्धन किया।

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पहुंचने के बाद यह दल नासा के अंतरिक्ष यात्री जेसिका मीर, जैक हैथवे और क्रिस विलियम्स, यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी की अंतरिक्ष यात्री सोफी एडेनोट तथा रोस्कोस्मोस के अंतरिक्ष यात्री सर्गेई कुद-स्वेर्चकोव, सर्गेई मिकाएव और आंद्रेई फेद्याएव के साथ मिलकर विभिन्न वैज्ञानिक गतिविधियों को आगे बढ़ाएगा।

मिशन का उद्देश्य लगभग आठ माह तक अंतरिक्ष में रहकर वैज्ञानिक अनुसंधान करना तथा नई प्रौद्योगिकियों का परीक्षण करना है। इन अनुसंधानों से मानव अंतरिक्ष अन्वेषण को नई दिशा मिलने के साथ पृथ्वी पर उपयोगी तकनीकों के विकास में भी सहायता मिलेगी। इस दल की पृथ्वी पर वापसी अप्रैल 2027 में निर्धारित है।

रूस की अंतरराष्ट्रीय मानवीय सहयोग एजेंसी की प्रमुख येलेना रेमिजोवा ने बताया कि इस प्रक्षेपण के साथ भारतीय स्कूली विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई चित्रकृतियां भी अंतरिक्ष में भेजी गई हैं। इसे बच्चों को विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान के प्रति प्रेरित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

अनिल मेनन का जन्म अमेरिका के मिनियापोलिस में भारतीय और यूक्रेनी मूल के प्रवासी परिवार में हुआ था। वह पेशे से आपातकालीन चिकित्सा विशेषज्ञ हैं तथा अमेरिकी अंतरिक्ष बल में कर्नल के पद पर कार्यरत हैं। अमेरिकी वायुसेना में सेवा के दौरान उन्होंने अफगानिस्तान में भी कार्य किया।

दिल के अरमां आंसुओं में बह गए...

माही की गूंज, झाबुआ डेस्क।

दतिया। जरा सोचिए उस दूल्हे के दिल पर क्या बीतती होगी जो सब कुछ तैयारी करके बारात लेकर निकलने ही वाला होता है और उसे पता चलता है कि, दुल्हन को कोई और ले गया है।

कुछ ऐसी ही स्थिती भाजपा के नेता और शिवराज सरकार में नंबर 2 की हैसियत रखने वाले डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा के साथ हुआ। कानूनी लड़ाई के माध्यम से कांग्रेस विधायक की सदस्यता रद्द करवाने से लेकर उपचुनाव के लिए व्यापक तैयारी और जनसंपर्क से लेकर चुनाव हेतु अपना नामांकन फार्म तक खरीद लिया था। लेकिन जब पार्टी द्वारा अधिकृत प्रत्याशी की सूची जारी हुई तो उसमें नाम नदारत मिला। समर्थक गुस्साए हाईवे जाम किया और इस्तीफों का दौर चला। लेकिन भाजपा ने सरकार और संगठन के बलबूते न केवल इस पर काबू पाया बल्कि सभी नाराज कार्यकर्ताओं के साथ ही डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा के पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी आशुतोष तिवारी को नामांकन रैली में शामिल भी कराया। जहां मंच पर भाषण देते हुए डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा भावुक हो गए जिसको लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है। मंच पर भले ही भारी मन से उन्होंने भाजपा अधिकृत प्रत्याशी को विजय बनाने की अपील जारी कर दी लेकिन उनके अंदर के भाव आंसुओं के जरिए बाहर आ ही गए।

समय बड़ा बलवान है

डॉक्टर मिश्रा के टिकट कटने के बाद सोशल प्लेटफॉर्म पर लगातार प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ गई है। शिवराज सरकार में गृहमंत्री जैसा महत्वपूर्ण पद संभालने वाले और अन्य उम्मीदवारों को टिकट दिलाने वाले कद्दावर नेता खुद का टिकट न ला पाए। जिसको लेकर कई यूजर्स लिखते हैं कि, समय-समय का फेर है और समय सदा एक समान नहीं रहता है। कई लोगों ने डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा और डॉक्टर मोहन यादव की पुरानी फोटो को भी खूब वायरल किया। जिसमें डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा मंत्री और उज्जैन के प्रभारी मंत्री थे और डॉक्टर मोहन यादव उज्जैन के विधायक थे और किसी काम के लिए प्रभारी मंत्री से मिलते नजर आ रहे थे। लेकिन अब स्थिति बदल चुकी है डॉक्टर मोहन यादव मुख्यमंत्री है और डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा को उपचुनाव का टिकट भी नहीं मिल पाया है। राजनीति में असंभव कुछ भी नहीं है फर्श से अर्श और अर्श से फर्श तक पहुंचने में देर नहीं लगती है।

अपनों पर सितम और गैरों पर रहम

किसी भी राजनीतिक दलों द्वारा किसी भी चुनाव में किसी दावेदार को टिकट देना या न देना उसके आंतरिक मामलों का विषय है। लेकिन चुकी यह जनता से जुड़ा मुद्दा है इसीलिए इस पर मीडिया की नजर तो रहती ही है। भाजपा द्वारा टिकट वितरण में दो सीटों पर घोषित प्रत्याशी के लिए अलग-अलग स्थिति देखने को मिली। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा खाली की गई सीट पर पार्टी द्वारा घोषित प्रत्याशी ने अपने नाम की घोषणा होने के बाद पारिवारिक कारणों का हवाला देते हुए अपना टिकट लौटा दिया। वहीं मध्य प्रदेश में डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा को टिकट न देने पर बवाल हुआ और जिला अध्यक्ष सहित सैकड़ो पदाधिकारी ने इस्तीफे की घोषणा कर दी। पूरे घटनाक्रम पर राजनीतिक विशेषज्ञ की राय है कि, अपने आप को कार्यकर्ता आधारित पार्टी होने का दावा करने वाली भाजपा का यही आंतरिक लोकतंत्र है। वही टिकट वितरण में कार्यकर्ताओं और संगठन की सहमति लेने के दावे की भी हवा निकलती हुई दिखाई दे रही है। क्योंकि टिकट वितरण के बाद पार्टी के जिलाध्यक्ष का इस्तीफा होना इस बात की पुष्टि करता है कि, टिकट वितरण में पार्टी के जिलाध्यक्ष को भी कोई खबर नहीं रहती है।

वहीं बिहार में टिकट लौटना यह दर्शाता है कि, जिसे चुनाव लड़ना है उसे भी विश्वास में नहीं लिया गया था। एक तरफ वर्षों पुराने कार्यकर्ताओं को दरकिनार किया जाता है वहीं दूसरी तरफ अन्य दलों से आए नेताओं को पार्टी कुछ घंटे के भीतर ही टिकट दे देती है। पश्चिम बंगाल से राज्यसभा से इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल हुए नेताओं को भाजपा ने कुछ ही घंटे में इस सीट के लिए भाजपा की ओर से टिकट दे दिया। जिसके बाद आम भाजपा कार्यकर्ताओं के मन में यही सवाल उठ रहा है कि, अपनों पर सितम और गैरों पर रहम क्यों...?

क्या यह चुनाव मुख्यमंत्री के कार्यों की समीक्षा

डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा के उप चुनाव का टिकट कटने को लेकर कई तर्क दिए जा रहे हैं जिसमें से प्रमुख है कि, पार्टी द्वारा कराए गए आंतरिक सर्वे में डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा की स्थिति कमजोर पाई गई थी। वहीं उपचुनाव हारने पर सीधा असर मुख्यमंत्री की छवि पर पड़ता है। ऐसे में पार्टी कोई भी जोखिम उठाना नहीं चाहती क्योंकि विजयपुर उपचुनाव में पार्टी की किरकरी हो चुकी है। जहां कांग्रेस से भाजपा में लाए गए विधायक को मंत्री तक बनाया गया उसके बावजूद उसे हार का सामना करना पड़ा था। किसी भी उपचुनाव में सरकार के कार्यों को लेकर जनता का फीडबैक सामने आता है। ऐसे में भाजपा सरकार दूध का जला छाछ भी फूक-फूक कर पीता है की तर्ज पर कार्य कर रही है। लेकिन उसमें कितना सफल हो पाती है यह तो चुनाव परिणाम पर ही निर्भर करेगा।

कांग्रेस के पास खोने को कुछ नहीं

जहां तक मुख्य विपक्षी कांग्रेस का सवाल है उसके पास खोने को कुछ नहीं है। क्योंकि वो अगर चुनाव हार भी जाती है तो यह कह सकती है कि भाजपा ने सत्ता के दम पर यह सीट हथिया ली। वहीं उपचुनाव जीतने की स्थिति में वह सरकार के खिलाफ आक्रामक हो सकती है। और जीत उसके लिए टॉनिक का काम करेगी और वो सरकार की नीतियों के खिलाफ अधिक उग्र हो सकती है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी को और अधिक फ्री हेड मिल सकता है वही कार्यकर्ताओं में नया जोश आ सकता है। पार्टी डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा के टिकट कटने के मुद्दे को हवा देकर भाजपा में मौजूद डॉक्टर नरोत्तम मिश्रा के समर्थकों के वोट कांग्रेस प्राप्त करने का प्रयास कर सकती है। वहीं उपचुनाव का परिणाम विपरीत रहने पर कांग्रेस पार्टी को अपनी रणनीति बदलने पर मजबूर होना पड़ेगा। आगे क्या होता हे यह तो उपचुनाव परिणाम ही तय करेगा।

प्रशासन के गलियारों से लेकर सोशल मीडिया तक फर्जी पट्टा वितरण कांड फिर भी अभी तक नहीं हुई कार्रवाई

सरकारी एवं रिटायर्ड कर्मचारियों को भी दिए पट्टे सामने नही आ रहे

माही की गूंज, पेटलावद।

पेटलावद विकास खंड की सबसे ज्यादा राजस्व वसूलने वाली ग्राम पंचायत सारंगी में सामने आए अवैध पट्टे वितरण मामले में प्रशासन की ओर से कोई बड़ी कार्यवाही अब तक नहीं हुई है । शिकायत की जांच को लगभग एक माह बीतने को है लेकिन प्रशासन अभी तक किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा है। वहीं राजनीति दबाओ और सत्तापक्षियों द्वारा अवेध पट्टा वितरण मामले में ग्राम पंचायत सारंगी के अवैध पट्टा वितरण में शामिल जिम्मेदार लोगों पर कार्यवाही होने से रोकने के प्रयास की चर्चा भी जोरो पर है। दूसरी ओर शिकायतकर्ताओं पर भी दबाव बना कर शिकायत को दबाने के प्रयास की खबरे भी चर्चाओं में है।

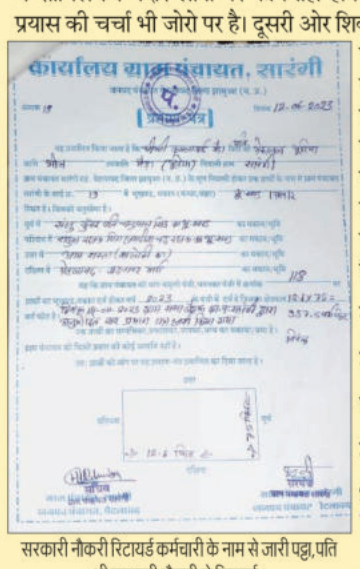

सरकारी नौकरी रिटायर्ड कर्मचारी के नाम से जारी पट्टा,पति भी सरकारी नौकरी से रिटायर्ड।

सोशल मीडिया पर पोस्ट के माध्यम से भी विरोध

सारंगी ग्राम पंचायत को लेकर पीड़ित ओर समर्थक जिन्होंने पट्टे के नाम पर बड़ी रकम 82 लाख रुपए ग्राम पंचायत सारंगी की सरपंच, उप सरपंच ,सचिव को देकर पट्टे दिए जाने का गंभीर आरोप लगाया है। इस मामले के सामने आने के बाद से सोशल मीडिया पर सारंगी ग्राम पंचायत ओर सरपंच को लेकर पोस्ट वायरल की जा रही है। पोस्ट के माध्यम से 82 लाख की लेन देन ओर पट्टे की बिक्री के लिए बड़ी रकम देने पर पट्टे उपलब्ध तक लिख जा रहा है। बताया जा रहा जवाब में सारंगी सरपंच की ओर से सोशल मीडिया में किसी मंदिर की जमीन पर अवैध कब्जे को लेकर पोस्ट की गई जिसे माना जा रहा है कि शिकायतकर्ताओं में से किसी पर दबाओ बनाने का प्रयास किया गया है। खबर के साथ में अलग अलग सोशल मीडिया पोस्ट के स्क्रीन शॉट लगा रहे है। वहीं इस मुद्दे को लेकर उप सरपंच और पट्टाधारी के माध्य पट्टे की लेन देन ओर पट्टे में बताई गई जगह नहीं मिलने की बातचीत भी वायरल हो चुकी है, वही वीडियो भी वायरल हो रहे हैं जिसमें पट्टे विरतण को लेकर बात चित सामने आई है।

सोशल मीडिया पोस्ट के स्क्रीन शॉट।

रिटायर्ड कर्मचारी को भी पट्टा

पूरे मामले की तह तक जाने का जब हमने प्रयास किया तो पता लगा कि जिन लोगों को पट्टे जारी किए गए है वो सक्षम है ओर पैसे देकर सरकारी जमीन पट्टे के नाम पर खरीदी है। ज्यादातर पट्टे महिलाओं के नाम से इसलिए जारी किए गए क्योंकि उनके नाम से पंचायत ओर राजस्व रिकॉड में कोई जमीन दर्ज नहीं है। सरकारी कर्मचारीयो के नाम से भी पट्टे जारी करने की बात सामने आई हैं लेकिन नौकरी खतरे में न पड़ जाए इस डर से अभी ऐसे लोग सामने नहीं आए । जिन लोगों द्वारा शिकायत की गई उनमें एक नाम सामने आया जो शिकायत में सबसे पहले नंबर पर दर्ज है कमलाबाई पति भेरूलाल भूरिया , ग्राम पंचायत ने इस नाम से भी पट्टा जारी किया है, पट्टे देने की बात खुद सरपंच कैमरे पर स्वीकार कर चुकी हैं, जबकि सरकारी पेंशन ले रहे रिटायर्ड कर्मचारी को पट्टा किन परिस्थितियों में दिया गया ये स्वतः ही समझ का विषय है। मिली जानकारी ओर सूत्रों के अनुसार जिसके नाम से पट्टा जारी हुआ वो ओर उनका पति दोनों ही शासकीय कर्मचारी होकर रिटायर्ड हैं,पत्नी शिक्षा विभाग जबकि पति पशु चिकित्सा विभाग से रिटायर्ड हो चुके है।

सरपंच की आईडी से सोशल मीडिया की पोस्ट।

जांच में कई गंभीर बिंदु है जिन पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है ओर जांच को एक अधिकारी से दूसरे अधिकारी के कार्यालय में घुमाया जा रहा है। शिकायत के एक माह बाद भी जांच कर्ता अधिकारी ये तय नहीं कर पाए कि आखिर इस पूरे मामले में क्या पाया गया। खुद 16 शिकायतकर्ता जांच का इंतजार कर रहे है।

बारिश की बेरुखी ने बड़ा दी किसानों की चिंता

माही की गूंज ,सारंगी ।

खरीफ सीजन की शुरुआत में हुई अच्छी बारिश से उत्साहित किसानों ने सारंगी क्षेत्र में सोयाबीन ,मक्का, उड़द सहित अधिकांश फसलों की बोवनी पूरी कर ली थी फसले अंकुरित भी हो गई थी लेकिन बीते दिनों से बारिश नहीं हुई है तेज धूप है पश्चिम क्षेत्र से हवा चल रही है। इससे किसानों की चिंता बढ़ गई है लगातार कम होती मिट्टी की नमी से खेतों में अंकुरण प्रभावित होने लगा है । किसानों का कहना है कि यदि अगले कुछ दिनों में अच्छी बारिश नहीं हुई तो कई स्थानों पर दोबारा बोवनी की नौबत आ सकती है। इससे खेती की लागत काफी बढ़ जाएगी ,शुरुआती बारिश के बाद किसानों ने तेजी से खेतों में बोवनी की थी ,अच्छी फसल की उम्मीद भी जगी थी। अब लगातार तेज धूप और वर्षा के लंबे अंतराल में हालात बदल दिए हैं । कई किसानों के खेतों में डाले गए बीज बारिश के अभाव में अंकुरित नहीं हो पा रहे हैं। किसानों का कहना है कि नमी तेजी से खत्म हो रही है ,कई स्थानों पर पौधे मुरझाने लगे हैं। किसानों ने बताया कि यदि दोबारा बोवनी करनी पड़ी तो बीज, ट्रैक्टर डीजल, मजदूरी और अन्य कृषि कार्यों पर फिर से खर्च करना पड़ेगा । इससे उत्पादन लागत लगभग दोगुनी हो जाएगी किसान राजू भूरिया, मोहन पाटीदार , बसंती लाल वर्मा, राजेंद्र पाटीदार आदि किसानों का कहना है की खरीफ की पहली बोवनी महत्वपूर्ण होती है अगर एक-दो दिनों में बरसात नहीं हुई तो फसले प्रभावित होकर वह पूरे सीजन की पैदावार पर सीधा असर पड़ेगा।

मासूम उत्कर्ष को न्याय दिलाने के लिए निकली जन आक्रोश रैली

माही की गूंज, पेटलावद ।

ग्राम कोदली के 5 वर्षीय मासूम उत्कर्ष को न्याय दिलाने की मांग को लेकर बुधवार को पेटलावद में उत्कर्ष के परिजनों एवं न्यायिक मानवाधिकार परिषद, जिला झाबुआ के संयुक्त तत्वावधान में एक शांतिपूर्ण एवं विशाल जन आक्रोश रैली का आयोजन किया गया। रैली में बड़ी संख्या में नागरिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, युवाओं एवं क्षेत्रवासियों ने सहभागिता कर पीड़ित परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए न्याय की मांग का समर्थन किया।

रैली का शुभारंभ श्रद्धांजलि चौक, पेटलावद से हुआ, जहाँ सर्वप्रथम मासूम उत्कर्ष को श्रद्धासुमन अर्पित कर दो मिनट का मौन रखा गया। इसके पश्चात उपस्थित जनसमूह ने शांतिपूर्वक रैली निकालते हुए पुलिस थाना पेटलावद तक मार्च किया।

रैली के दौरान उपस्थित लोगों ने एक स्वर में मांग की कि प्रकरण की विवेचना विधि अनुसार शीघ्र पूर्ण कर न्यायालय में चार्जशीट यथाशीघ्र प्रस्तुत की जाए तथा मामले की सुनवाई फास्ट ट्रैक न्यायालय में कराई जाए। जिससे पीड़ित परिवार को समयबद्ध न्याय प्राप्त हो सके। साथ ही यह भी मांग रखी गई कि न्यायालय में आरोप सिद्ध होने की स्थिति में दोषियों को कानून के अनुसार उपलब्ध कठोरतम दंड दिया जाए। रैली के समापन पर थाना प्रभारी, पेटलावद को एक ज्ञापन सौंपा गया, जिसमें उपरोक्त मांगों को सक्षम अधिकारियों तक पहुंचाने का अनुरोध किया गया। इस अवसर पर आयोजकों ने स्पष्ट किया कि रैली का उद्देश्य किसी व्यक्ति अथवा संस्था के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन करना नहीं था, बल्कि एक मासूम बालक के लिए शीघ्र एवं निष्पक्ष न्याय की मांग को लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक तरीके से उठाना था। न्यायिक मानवाधिकार परिषद, जिला झाबुआ ने कहा कि परिषद पीड़ित परिवार के साथ न्याय की इस लड़ाई में विधिसम्मत सहयोग प्रदान करती रहेगी तथा समाज के सभी वर्गों से न्याय एवं मानवता के पक्ष में एकजुट रहने का आह्वान किया। रैली के दौरान उपस्थित नागरिकों ने भी कहा कि किसी भी मासूम के साथ घटित गंभीर अपराध के मामलों में समयबद्ध न्याय सुनिश्चित होना समाज और न्याय व्यवस्था, दोनों के हित में आवश्यक है। पूरे कार्यक्रम का संचालन शांतिपूर्ण एवं अनुशासित वातावरण में संपन्न हुआ। मासूम उत्कर्ष अमर रहे तथा उत्कर्ष को शीघ्र न्याय मिले जैसे नारों के साथ रैली का समापन हुआ।

गरवाल बने भील प्रदेश मुक्ति मोर्चा के जिला संयोजक

माही की गूंज, पेटलावद।

भील प्रदेश मुक्ति मोर्चा ने संगठन विस्तार एवं जनसंगठन को मजबूत बनाने के उद्देश्य से कांतिलाल गरवाल को जिला संयोजक नियुक्त किया है। नियुक्ति पर भारत आदिवासी पार्टी (बाप) के राष्ट्रीय महासचिव ईश्वर भाई गरवाल, बाप जिला अध्यक्ष थावरसिंह सोलंकी, डीसीसी प्रभारी संदीप वसुनिया, बीसीसी प्रभारी खुशाल भाभर तथा बाप ब्लॉक प्रभारी धर्मेंद्र डामोर ने कांतिलाल गरवाल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए विश्वास व्यक्त किया कि उनके नेतृत्व में संगठन जिले में और अधिक सशक्त होगा तथा आदिवासी समाज के अधिकारों,जल-जंगल-जमीन, सामाजिक न्याय और भील प्रदेश की जनभावनाओं से जुड़े मुद्दों को मजबूती से आगे बढ़ाया जाएगा। नवनियुक्त जिला संयोजक कांतिलाल गरवाल ने संगठन के शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे संगठन की विचारधारा को गांव-गांव तक पहुंचाने, युवाओं को जोड़ने तथा आदिवासी समाज के हितों और अधिकारों की लड़ाई को पूरी निष्ठा, ईमानदारी एवं समर्पण के साथ आगे बढ़ाएंगे। यह नियुक्ति नंदर माता, मोहनकोट में आयोजित भील प्रदेश मुक्ति मोर्चा की बैठक के दौरान की गई, जिसमें सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे। बैठक में संगठन को और अधिक मजबूत एवं सक्रिय बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण विषयों पर भी चर्चा की गई।

सोलंकी बने विकासखंड अधिकारी

माही की गूंज, थांदला।

विकासखंड शिक्षा अधिकारी (बीईओ) थांदला दीपेश कुमार सोलंकी के लिए उनका जन्मदिन इस बार दोहरी खुशियां लेकर आया। राज्य शासन द्वारा जारी पदोन्नति आदेश में उन्हें जनजातीय कार्य विभाग में क्षेत्र संयोजक विकासखंड अधिकारी के पद पर पदोन्नत किया गया है। उल्लेखनीय है कि वे पिछले लगभग दो वर्षों से इसी पद का अतिरिक्त प्रभार संभाल रहे थे। अब शासन ने उनके अनुभव और सेवाओं को देखते हुए उन्हें नियमित रूप से इस पद पर पदोन्नत किया है। दीपेश सोलंकी वर्तमान में थांदला में विकासखंड शिक्षा अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं उनकी कार्यशैली को लेकर विभागीय स्तर पर सकारात्मक चर्चा होती रही है।

शिक्षा के स्तर में गुणवत्ता का सुधार और सरकारी विद्यालयों से नीजी विद्यालयों में जाते विद्यार्थी

माही की गूंज, झाबुआ।

देश में सबसे अधिक सरकारी स्कूल और शिक्षक मध्यप्रदेश में है, और प्रदेश में 463 स्कूल ऐसे है, जहां पर इस वर्ष एक भी नए बच्चें ने प्रवेश नहीं लिया, इसी तरह आंकड़ो के अनुरुप बनती रिपोर्ट के अनुसार पूरे देश में मध्य प्रदेश तीसरा प्रदेश है जहां अत्यधिक संख्या में विद्यालय नए विद्यार्थियों के प्रवेश से वंचित रहा है। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफार्मेशन सिस्टम फार एजुकेशन (युडाइस) की रिपोर्ट में देशभर के स्कूलों की सूची सामने आई थी।

इसी प्रकार प्रदेश एकल शिक्षक स्कूल में पांचवे स्थान पर है, रिपोर्ट के अनुसार मध्यप्रदेश में 7217 विद्यालय ऐसे हैं जहां पर सिर्फ और सिर्फ एक शिक्षक ही है, और उसी एक शिक्षक के विश्वास में स्कूल चल रहे हैं। आंकड़ो की माने तो मध्यप्रदेश में पहली कक्षा से 12वी कक्षा तक के एक लाख 22 हजार सरकारी स्कूल है, इन स्कूलों में करीब सात लाख शिक्षक पदस्थ है। देखा जाए तो यह आंकड़ा देश में सर्वाधिक है। सरकार बच्चों को आकर्षित करने के लिए सबकुछ करती है, प्रवेश के दौरान, स्कूल चले हम, और गृह संपर्क जैसे अभियान भी चलाती है। लेकिन सरकार के सारे अभियान असुविधा की आड़ में अव्यवस्थित होते हुए असफल हो जाते हैं।

देश में सरकारी स्कूली शिक्षा का और भी बूरा हाल पिछले दो वर्षों में देखा गया है। देश में सरकारें सरकारी स्कूलों में सुविधाएं और शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए कार्य करने के साथ-साथ शिक्षको की संख्या भी बड़ी है, जिससे शिक्षक विद्यार्थी अनुपात भी उत्तम हुआ है, परंतु इसके पश्चात भी पिछले दो वर्षों में सरकारी स्कूल से 86 लाख विद्यार्थी बाहर हुए है और निजी स्कूलों में 88 लाख विद्यार्थी इन दो वर्षों में बढ़ गए है। इसका अर्थ यह हुआ कि, सरकारी स्कूलों के मुल्य पर निजी स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्यां बढ़ रही है। नीति निर्माताओं के लिए यह चिंतनिय विषय है कि, इतने बड़े पैमाने पर सरकारी विद्यायलों पर संसाधन खर्च करने के बाद भी सरकारी स्कूल विद्यार्थियों और अभिभावकों की अपेक्षा पर खरे क्यों नहीं उतर रहे हैं, जबकि निजी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्न है, और निजी स्कूल तय किए गए मानकों का पालन भी नहीं करते हैं।

सरकारी और निजी विद्यालय में इस अंतर का मुख्य कारण क्या हो सकता है, जबकि रिपोर्टस् के अनुसार निजी विद्यालय की तुलना में सरकारी स्कूलों में पढ़ाई ज्यादा अच्छी होती है। शिक्षा विशेषज्ञों और स्वतंत्र सर्वे के अनुसार अंग्रेजी माध्यम की इच्छा में अभिभावक अपने बच्चों को निजी विद्यालयों में भेज रहे हैं, उनकी अवधारण है कि, उज्जवल भविष्य और नौकरी के लिए अंग्रेजी आना आवश्यक है। अधिकतर स्कूलों में क्षेत्रिय भाषा में शिक्षा देते हैं। दूसरा मुख्य कारण बच्चों की देखभाल, निगरानी, और जवाबदेही की सरकारी स्कूलों में कमी होती है जबकि सरकारी शिक्षकों को वेतन भी बहुत अच्छा मिलता है, फिर भी सरकारी स्कूलों में ढीले रवैये और शिक्षको की अनुपस्थिति की शिकायतें मिलती रहती है, वहीं प्रायवेट स्कूलों में बच्चों को मेनेजमेंट का डर बना हुआ रहता है। तीसरा कारण यह भी हो सकता है कि गांवों में और शहरों की कॉलोनियों में भी छोटे-छोटे प्राइवेट स्कूल खुले है जिनकी माह की फीस भी बहुत कम होती है, जहां निर्धन परिवार भी अपने पेट काटकर बच्चों को निजी विद्यालय में भेज देता है।

सरकार द्वारा बच्चों को स्कूल लाने के लिए बहुत से प्रलोभन दिए जाते हैं फिर भी पढ़ाई के लिए बच्चा वर्तमान समय में सरकारी विद्यालय जाने से मुंह मोड़ रहा है। बच्चों के लिए मध्यान भोजन, स्कूल ड्रेस, पुस्तकें इत्यादी निशुल्क दिए जाते हैं, उसके पश्चात भी बच्चों में सरकारी विद्यालय में जाने की रुची नहीं बनती दिखाई पड़ती। उसके विपरित बहुत से ऐसे बच्चें जिन्होंने महामारी के समय सरकारी विद्यालयों की ओर कदम बढ़ाए थे वे अब फिर से निजी विद्यायलों में प्रवेश कर चुके है।

पिछले एक दशक में इन समस्या से जुझते हुए देश के 94,000 सरकारी स्कूल कम विद्यार्थी होने के कारण मर्ज किए गए है या फिर बंद कर दिए है, यह नीति आयोग की एक समीक्षा रिपोर्ट में दर्शाया गया है। इस के साथ ही कोरोना महामारी के बाद वर्षों में बहुत बड़ा उलटफेर दिखाई दिया है, जब कोरोना महामारी के समय आर्थिक तंगी के चलते बहुते अभिभावकों ने अपने बच्चों को सरकारी विद्यायल में प्रवेश दिलाया था, उससे अधिक अभिभावकों ने अपने बच्चों को अब निजी विद्यालयों में ले जा चुके है।

दुरस्त ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी स्कूल अभी भी अभाव में चल रहे हैं, बहुत से प्राथमिक स्कूल ऐसे है जिनमें बच्चों की संख्या 9 से 10 या 12 ही है, वहां सुविधाओं का अभाव है, उनके माता-पिता अक्सर वहीं के शिक्षको से कहते हैं कि, हम अपने बच्चों को बिना सुविधा के नहीं पढ़ाएगे। बहुत से स्कूल ऐसे है जहां बारिश में छत टपकती है, जहरीले जानवर स्कूलों के कोने में, बाथरुम में घुस जाते हैं। बहुत से स्कूलों में पहुंचने की समस्या समान रुप से होती है जहां बारिश के मौसम में तो समस्या विकराल रुप लेकर शिक्षक और विद्यार्थियों को नहीं आने देती ऐसे में असुविधा वाली स्कूलों में माता-पिता कैसे अपने लाडले को शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजेगे। सरकारी स्कूलों की शिक्षा के स्तर में इस तरह तो सुधार नहीं हो पाएगा, सरकर को इस विषय की तरफ ध्यान रखकर चिंता करना जरुरी है। वहीं शाला त्यागी बच्चों का तो विषय ही अगल है।

रिकेश बैरागी

बहरहाल इस बदलाव के पीछे क्या कारण हो सकता है... इसका सबसे बड़ आधार है मानवीय आकांक्षा। प्रत्येक माता-पिता यही चाहते है कि उनका बच्चा अच्छी शिक्षा प्राप्त कर उनसे बेहतर जीवन जिए। निजी स्कूलों का आकर्षण सरकारी स्कूलों से कई गुना ज्यादा होता है विशेषतौर पर वे सुरक्षा और अंग्रेजी माध्यम को सामने रखते है। आज के दौर में अंग्रेजी माध्यम, निजी विद्यालय और एक सुरक्षित बेहतर भविष्य को लगभग एक ही अर्थ में देखा जाने लगा है। इसके पीछे गहरा और गंभीर सामाजिक मनोविज्ञान काम करता है। किसी भी गांव, कस्बें, शहर नगर में प्रशासनिक अधिकारी, चिकित्सक, व्यापारी या जन प्रतिनिधि अपने बच्चों को निजी विद्यालय में भेजते हैं तब अन्य परिवार भी प्रतिष्ठावश उसी दिशा में बढ़ते है। यह अंतर एक दिन सरकारी और निजी स्कूल के बच्चों में गहरी गंभीर खाई न पैदा कर दे सरकार को इस विषय पर विचार-विमर्श करने की अत्धिक आवश्यकता है।

भटनागर की भटाईगिरी व प्राचार्य संजय आर्य की कमीशन खोरी नतीजा बच्चे एवं पालक परेशान

माही की गूंज, भामल, सुनील सोलंकी।

स्कूल से जुड़े सिस्टम व भटनागर जैसे बुक सेलर के संबंध में पूर्व में भी माही की गूंज ने उजागर किया है कि किस तरह से मोटी कमीशन वाली प्राइवेट पब्लिशर की किताबें को अपने अनुसार वितरण करवा कर कमिशन का खेल चलाया जाता है। जिसका उदाहरण पूर्व में मध्य प्रदेश के जबलपुर में कलेक्टर ने भी उजागर किया था।

भामल में स्थित महर्षि दयानंद आर्य विद्या निकेतन स्कूल कहने को तो वैदिक शिक्षा देने की पाठशाला है लेकिन कमीशन खोरी की मिसाल ही वैदिक संस्कार को धूमिल करती नजर आ रही है।

हाल ही में सामने आ रहे मामले में यह की 16 जून से स्कूले खुलकर बच्चे स्कूल बैग व किताबें लेकर स्कूल जाने लगे हैं। स्कूल के संबंध में मामला यह है कि इंदौर का कोई भटनागर बुक सेलर है और उसकी भटाईगिरी ऐसी है कि, वह स्थानीय स्तर पर मुख्य बुक सेलर को प्राचार्य से साठ-गांठ कर बुक्स नहीं देता है। वह ऐसे विक्रेता को देखता है जो मात्र 10 परसेंट तक किताबों का कमीशन लेकर बच्चों को स्टेशनरी के साथ उसकी किताबें बेच दे और प्राचार्य की भी कमीशन खोरी के चलते इसमें सहमति प्रदान करता है।

ऐसे में भटनागर की भटाईगिरी ऐसी रहती है कि वह ऐसे व्यक्ति को भी किताबे बेचने हेतु दे देता है जिसका मुख्य रूप से स्टेशनरी व्यवसाय से कोई लेना-देना ही नहीं रहता है। तथा अन्य व्यापारी जैसे कपड़ा हो, बर्तन व्यापारी हो या अन्य किसी सामग्री के व्यापारी को यह किताबें बेचने को दे देता है। जिसका नतीजा यह रहता है कि कम कमीशन पर किताबें बेचने वाला कथित व्यापारी बच्चे एवं पालकों को किताबों के साथ अन्य स्टेशनरी सामग्री आवश्यक रूप से लेने हेतु बाध्य कर देता है। अगर कोई पालक व बच्चों के पास पुरानी बची हुई कापिया हो या अन्य किसी स्टेशनरी दुकान से कॉपियां-पेन ले आता है तो ऐसे पालक व बच्चों को बिना कॉपियों के किताबें देने से एक सिरे से मना ही कर दिया जाता है।

यहा स्थिति भामल की महर्षि दयानंद आर्य विद्या निकेतन की किताबों की बिक्री की बात करें तो यह भामल के एक शिक्षक पुत्र को व खवासा के एक होटल संचालक को दी गई है।

यहां भी सामने आया कि बच्चों के जिन पालकों के पास कॉपियां रखी है या अन्य जगह से लेकर आने पर स्कूल में लगाई प्राइवेट बुक्स देने से एक सिरे से इनकार कर देते हैं और कहते हैं जहां से कॉपियां लाए हो वहीं पर जाकर यह प्राइवेट बुक्स से लेकर आओ, हम यहां पर से आपको किताबें नहीं देंगे। ऐसे में बच्चे एवं पालक स्कूल द्वारा दी गई सूची लेकर अन्य जगह भटकते हैं एवं परेशान होकर आखिरकार पत्रकारों तक भी पहुंच रहे हैं।

जब यह मामला माही की गूंज के पास आया तो भामल के व्यापारी दीपक चौहान से बात करने पर बताया कि, इंदौर का भटनागर 10 प्रतिशत ही कमीशन देता है और खवासा होटल संचालक व मुझे स्कूल में लगने वाली सभी प्राइवेट बुक्स आधी आधी दी है। लेकिन खवासा वाले व्यापारी की बुक्स पूरी बिक चुकी है। दीपक ने बताया कि, उसके पास इंदौर से भटनागर का भी फोन आया और उसने किताबों के पैसे मांगने के साथ कहा कि, खवासा के होटल संचालक के यहां सभी किताबें स्कूल की बिक चुकी है लेकिन आपके यहां क्यों नहीं बिकी। खवासा वाला और बुक्स का ऑर्डर दे रहा है। भटनागर से हुई बात के बाद दीपक का कहना है कि, मैं भामल में हूं और खवासा 5 किलोमीटर दूर है बावजूद खवासा के व्यापारी की सभी किताबें बिक जाना इसका कारण प्राचार्य संजय आर्य की कूटनीति का कारण बताया जा रहा है। और दीपक ने कहा कि मैं उन्हीं पालकों को किताबें देने से ना कह रहा हूं जो होटल संचालक के यहां से बुक्स खत्म होने पर पूरी कॉपियां स्टेशनरी देकर किताबें लेने मेरे पास भेजता है। बाकी कोई भी बच्चा या पालक अन्य बुक्स सेलर से कॉपियां या स्टेशनरी लेकर आता है उनको में सिर्फ किताबें भी दे देता हूं।

बात यहां यह कि, भटनागर की भटाईगिरी व प्राचार्य की कमीशन खोरी के चलते बच्चे व पालक परेशान हो रहे हैं। कुछ पालकगण माही की गूंज के पास आने पर दीपक चौहान से बात कर उन्हें किताबें दिलवाई गई।

नाबालिग की गुमशुदगी मामले में पिता ने पुलिस के वरिष्ठ अधिकारीयो और मुख्यमंत्री से लगाई गुहार

माही की गूंज , पेटलावद।

नगर के राम मोहल्ला क्षेत्र से लगभग तीन माह से अधिक समय से गायब नाबालिक युवती के पिता ने न्याय के लिए अब पुलिस के वरिष्ठ अधिकारीयो ओर मुख्यमंत्री से शिकायत पत्र भेज कर नाबालिक पुत्री को ढूंढने ओर आरोपियों पर कड़ी कार्यवाही की मांग की है। परेशान पिता ने शिकायत में लड़की को अपने साथ ले जाने वाले लड़के उसके पिता ओर अपने ही परिवार के लोगों के विरुद्ध शिकायत दर्ज करवाई है जो लड़की की खोजबीन करने में सहयोग करने की बजाए लड़की को ले जाने वाले के परिवार से समझौता करने का दबाव बना रहे है। पीड़ित पिता ने पूर्व में आरोपी द्वारा लड़की के साथ छेड़छाड़ की शिकायत की थी और पुलिस द्वारा समझाईश देने पर अजय मचार निवासी बनी को छोड़ दिया था बाद में 17 अप्रैल 2026 को मेरी नाबालिक पुत्री का अपहरण कर ले गया तब से लेकर अभी तक मेरी लड़की नहीं मिली। पीड़ित पिता ने बताया कि विगत तीन माह से थाने ओर एसडीओपी कार्यालय के चक्कर काट रहा हु लेकिन मेरी लड़की का कोई अता पता नहीं ओर पुलिस किसी के दबाओ में कार्यवाही नहीं कर रही है। दूसरी ओर मेरे ही परिवार के कुछ लोग जो आरोपी के करीबी रिश्तेदार हैं उनके द्वारा समझौता का दबाओ बनाया जा रहा है और उनकी बात नहीं मानने पर मेरी पत्नी के साथ मारपीट की गई जिसकी शिकायत पुलिस थाना पेटलावद में दर्ज करवाई । नाबालिक के पिता ने मुख्यमंत्री ओर पुलिस के बड़े अधिकारियों को शिकायत भेज कर कार्यवाही की मांग की है।

दो माह से गायब नाबालिक को नहीं खोज पाई पुलिस

मामला दर्ज करने में लगा दिए 18 दिन, समझौता नहीं करे इसलिए पुलिस ने लिया सपथ-पत्र

आवास सूची के भौतिक सत्यापन की मांग, अपात्रों को मिल रहा लाभ

माही की गूंज, पेटलावद ।

विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री आवास हेतु संघर्ष कर रहे ग्राम पंचायत बरवेट निवासी ईश्वर लाल पाटीदार को नई सर्वे सूची में भी योजना का लाभ नहीं मिली। आवास हेतु ईश्वरलाल कई बार जिला प्रशासन से लेकर जनपद पंचायत ओर सीएम हेल्पलाइन पर गुहार लगा चुके है लेकिन हर बार आश्वासन के साथ शिकायत बंद कर दी जाती है। बता दे कि ईश्वर लाल पाटीदार आवास हेतु पात्र है लेकिन सर्वे सूची में बार बार नाम नहीं आने से योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। मंगलवार को जनसुनवाई कार्यक्रम में पहुंच कर ईश्वर लाल पाटीदार ने शिकायत दर्ज करवाई ओर इस बार ग्राम पंचायत बरवेट द्वारा आवास हेतु पात्र किए गए नामों के भौतिक सत्यापन की मांग की । शिकायतकर्ता ने बताया कि सरपंच ,सचिव द्वारा मौके के फोटो आदि नहीं लिए गए जिससे सही पात्र लोगों को लाभ नहीं मिल पाया। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि ग्राम पंचायत द्वारा अपनी रिश्तेदारों और निकट के लोगों को लाभ दिलवाया जा रहा है। जिसका भौतिक सत्यापन किया जाए जिससे योजना का लाभ अपात्रों को मिलने की बात सामने आ जाएगी।

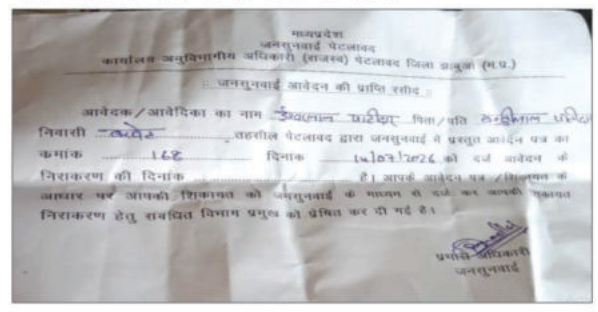

3 आरोपी फरार घोषित, 18 जुलाई तक पेश होने के आदेश

माही की गूंज,सारंगी।

पेटलावद तहसील के न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी प्रियम कुमार सक्सेना के न्यायालय ने भारतीय न्याय संहिता 2023 के तहत दर्ज प्रकरण में 3 आरोपियों के खिलाफ उद्घोषणा जारी की है।

न्यायालय के अनुसार डॉ. नरसिंह डाबी पिता हीराल डाबी निवासी देवरापड़ा सारंगी, माला पिता देवा गणावा निवासी ग्राम बनी रायपुरिया और प्रताप पिता भेरूलाल गामड़ निवासी ग्राम बनी रायपरिया पर भा.न्या.सं. 2023 की धारा 318(4), 338, 336(3), 61(2) के तहत दंडनीय अपराध का आरोप है। उद्घोषणा में बताया गया है कि इन तीनों पर गिरफ्तारी वारंट जारी किए गए थे, लेकिन वारंट की तामील नहीं हो पाई। रिपोर्ट में उल्लेख है कि आरोपी फरार हैं या वारंट की तामील से बचने के लिए अपना पता छिपा रहे हैं। न्यायालय ने उद्घोषणा के माध्यम से तीनों आरोपियों को निर्देशित किया है कि वे व्यक्तिगत रूप से 18 जुलाई 2026 को या उससे पूर्व जिला एवं सत्र न्यायालय पेटलावद, तहसील पेटलावद जिला झाबुआ में न्यायालय के समक्ष उपस्थित हों ऐसे उद्घोषणा जारी की गई है।

भारत और पोलैंड मिलकर करेंगे रक्षा उपकरणों का निर्माण

नई दिल्ली।

भारत के 'मेक इन इंडिया' अभियान को मजबूती देने की दिशा में भारत और पोलैंड के बीच रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की तैयारी शुरू हो गई है। दोनों देश आधुनिक रक्षा उपकरणों और सैन्य प्रणालियों के संयुक्त निर्माण की संभावनाओं पर विचार कर रहे हैं। इस संबंध में पोलैंड के उप विदेश मंत्री एवं सेक्रेटरी ऑफ स्टेट व्लादिस्लाव थियोफिल बार्टोसजेव्स्की ने जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि भारत पोलैंड द्वारा विकसित कुछ विशेष रक्षा प्रणालियों में रुचि रखता है। दोनों देशों के बीच इस बात पर चर्चा चल रही है कि इन प्रणालियों का निर्माण भारत में भारतीय भागीदारी के साथ कैसे किया जा सकता है। साथ ही कुछ भारतीय रक्षा प्रणालियों के निर्माण की संभावनाओं पर भी विचार किया जा रहा है, जिनमें पोलैंड की भागीदारी हो सकती है।बार्टोसजेव्स्की ने कहा कि वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए दोनों देश सुरक्षा और रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाना चाहते हैं। यह पहल केवल रक्षा उपकरणों की खरीद-बिक्री तक सीमित नहीं होगी, बल्कि संयुक्त उद्यमों के माध्यम से उत्पादन और तकनीकी सहयोग को भी बढ़ावा देगी।

उन्होंने कहा कि पोलैंड भारत के 'मेक इन इंडिया' अभियान को समझता है और चाहता है कि भविष्य की परियोजनाओं में भारतीय तथा पोलिश दोनों पक्षों की सक्रिय भागीदारी हो। उनका मानना है कि इस सहयोग से दोनों देशों को एक-दूसरे की तकनीकी विशेषज्ञता और औद्योगिक क्षमताओं का लाभ मिलेगा।

पोलैंड के उप विदेश मंत्री ने भारत और यूरोपीय संघ के बीच हुए मुक्त व्यापार समझौते का भी स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इससे व्यापारिक संबंधों को नई गति मिलेगी और दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग और मजबूत होगा। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पोलैंड यात्रा के दौरान दोनों देशों ने रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने पर सहमति जताई थी। अब इस दिशा में विस्तृत कार्ययोजना तैयार की जा रही है।

यूरोप में बदलते सुरक्षा परिदृश्य का उल्लेख करते हुए बार्टोसजेव्स्की ने कहा कि पोलैंड भारत को रक्षा क्षेत्र में एक विश्वसनीय साझेदार के रूप में देखता है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक परिस्थितियों में आए बदलावों के कारण रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने की आवश्यकता बढ़ी है।

मेडम रसूख का फायदा उठाकर ठेकेदारों से करवा रही थी अवैध निर्माण

शिकायत के बाद जिला अधिकारी ने रुकवाया काम

सरकारी भवन के आगे किया जा रहा अवैध निर्माण

मौके पर अवैध निर्माण हेतु पड़ी निर्माण सामग्री

– मौके पर कार्य रोकने पहुंचे एसडीओ ओर इंजिनियर

माही की गूंज , पेटलावद। राकेश गेहलोत

भाजपा सरकार में नौकरशाही कितनी हावी है इसका एक ओर नमूना पेटलावद में देखने को मिला । यहां पेटलावद में पदस्थ लोक निर्माण विभाग की इंजीनियर आरती बघेल द्वारा अपने रसूक का इस्तेमाल करते हुए हु डाक बंगले परिसर मे स्थित इंजीनियर आवास में खुद के सरकारी निवास स्थान के आगे अवैध निर्माण करवा रही है। मौके पर पहुंच कर जब देखा तो पता लगा कि इंजीनियर मैडम अपने सरकारी आवास के आगे दो पक्के कमरे बना रही है जिसका निर्माण कार्य मौके पर चालू पाया गया । जानकारी निकाली गई तो तो पता लगा कि किसी प्रकार से उक्त निर्माण सरकारी नहीं है ओर पूरा कार्य मनमानी से अवैध रूप से करवाया जा रहा है। मामला एसडीओ ओर ई साहब की जानकारी में होने के बाद भी मैडम कार्य जारी रखा। पूर्व में इसकी शिकायत भी हुई एसडीओ रेशम गामड़ ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया लेकिन ई साहब ने मौखिक निर्देश के साथ कार्य बंद करवा दिया था । लेकिन ई साहब के बदलते ही मैडम एक फिर अपने सरकारी आवास के बाहर निर्माण कार्य शुरू कर दिया।

ठेकेदारों से करवाया जा रहा था कार्य

बताया जा रहा है इंजीनियर मैडम क्षेत्र में लोक निर्माण विभाग के ठेके से कार्य कर रहे ठेकेदारों के माध्यम से उक्त अवैध निर्माण करवा रही हैं, धमकी ऐसी की कोई मना भी नहीं कर सकता , मौके पर सीमेंट, सरिया,गिट्टी,रेत सभी पर्याप्त मात्रा में डाल कर कार्य किया जा रहा है। अब अगर ये काम विभाग में कार्य कर रहे ठेकेदारों से करवाया जा रहा था तो ठेकेदार ये कार्य मैडम की किसी फीस के बदले या किसी नए काम लेने की जुगाड में कर रहे थे ये तो मैडम ही जाने । लेकिन इस तरह से बिना सरकारी कार्य स्वीकृत हुए अवैध रूप से सरकारी परिसर में कार्य कर निर्माण करना कानूनी अपराध की श्रेणी में आता है जिसका संज्ञान लेते हुए जिम्मेदार इंजिनियर , एसडीओ और अवैध निर्माण करने वाले ठेकेदार पर मामला दर्ज होना चाहिए।

मौके पर पहुंचे कर कार्य बंद करवाया

मामले की जानकारी विभाग के नए ई साहब दिलीप गुथरियां तक पहुंचा तो उन्होंने एसडीओ रेशम गामड़ ओर इंजिनियर सुनील चौहान को मौके पर भेज के कार्य बंद करवाया। बताया जा रहा मैडम घर पर ही थी लेकिन मौके पर आए अधिकारीयो को देख कर मैडम बाहर तक नहीं आई ओर उनके पति अधिकारी को सफाई देते हुए कार्य बंद करने की बात करते रहे। इंजिनियर सुनील चौहान ने बताया कि अधिकारी के निर्देश पर कार्य बंद करवा दिया है,और मौके से निर्माण सामग्री हटाने का भी कहा गया है,पंचनामा बना कर अधिकारियों को पेश किया जाएगा । कार्य बिना किसी सरकारी निर्माण स्वीकृति के अवेध रूप से चल रहा था इसकी पुष्टि भी हो गई। अब विभाग अपने ही विभाग के कर्मचारी के द्वारा किए जा रहे अवैध निर्माण को लेकर क्या कार्यवाही करते है ये देखना होगा,अगर विभाग के लोग ही शासकीय परिसर में अवैध निर्माण ओर अतिक्रमण करेंगे तो आम लोग तो शासकीय भूमि के साथ साथ शासकीय परिसर में भी लोग अवैध अतिक्रमण करने से पीछे नहीं हटेंगे।

संपादकीय

सब्जियों की माफिक रेल बर्थों की बिक्री

सही मायने में कलकत्ता हाईकोर्ट ने ट्रेनों में टीटीई के उस सर्वमान्य भ्रष्ट आचरण को सार्वजनिक रूप से उजागर किया है, जिसे रेलयात्री कीमत चुकाने के बाद भी कहने में संकोच करते हैं। यात्रियों से खचाखच भरी ट्रेनों में अक्सर मुश्किल से सफर करने वाले यात्री खाली पड़ी बर्थ अलॉट करा लेते हैं। जिसके एवज में उन्हें टीटीई को किराये के अलावा अतिरिक्त पैसा भी देना पड़ता है। यह चलन देशभर में विभिन्न ट्रेनों में दिखायी देता है। लेकिन अक्सर यात्री अपने गंतव्य स्थल तक पहुंचकर बात को आई-गई मान लेते हैं। लेकिन जब पैसे देकर अपराधियों को दी गई बर्थ के जरिये चलती ट्रेन में कोई बड़ा अपराध हो जाए तो मामला गंभीर हो जाता है। दरअसल, जस्टिस राजशेखर मंथा व जस्टिस बिस्वरूप चौधरी की बेंच साल 2009 में तीस्ता-तोरस एक्सप्रेस में हुई लूट और मौत के मामले में दो दोषियों की अपील पर सुनवाई कर रही थी। उस दौरान कोर्ट ने सख्त टिप्पणी की कि टीटीई खाली बर्थ ऐसे बेचते हैं,जैसे बाजार में सब्जियां बिकती हैं। ऐसे में अपराधी खाली बर्थ खरीदकर आरक्षित कोच तक पहुंच बना लेते हैं। वे फिर यात्रियों के साथ घुल-मिलकर उन्हें लूट लेते हैं। अदालत ने सख्त लहजे में कहा कि पैसे लेकर जनरल टिकट वाले यात्रियों को खाली बर्थ देने से अपराधियों को आरक्षित कोच के यात्रियों तक पहुंचने का मौका मिल जाता है। तीस्ता व तोरस केस में भी जो आपराधिक घटना हुई है, उसमें कई टीटीई ने अपनी जिम्मेदारी सही ढंग से नही निभायी। दरअसल, सत्रह साल पुराने केस में जलपाईगुड़ी से सियालदह जा रही तीस्ता-तोरसा एक्सप्रेस में जनरल टिकट पर सफर कर रहे दो बदमाशों ने टीटीई को पैसे देकर एस-8 कोच में खाली बर्थ ले ली थी। फिर इन्होंने खाने-पीने की चीजों में नशीला पदार्थ मिलाकर कुछ यात्रियों को बेहोश कर दिया और उनका सामान लूट लिया। घटना में जहरीले पदार्थ से सुनील कुमार दास की मौत हो गई थी, जबकि दूसरा लंबे समय अस्पताल में उपचार के बाद बच गया था।

दरअसल, इस मामले में दोनों आरोपियों को दोषी पाया गया, लेकिन पुलिस द्वारा पर्याप्त साक्ष्य न जुटाए जाने के कारण सात साल की जेल के बाद कोर्ट को उन्हें रिहा करना पड़ा। कोर्ट ने टीटीई ही नहीं, पुलिस को भी लापरवाह माना क्योंकि मृतक का विसरा फॉरेंसिक जांच को नहीं भेजा गया। दूसरे यात्री के अस्पताल में उपचार के रिकॉर्ड भी नहीं जुटाए गए। फलतरू हत्या के आरोप सिद्ध नहीं हो पाए। इस घटनाक्रम के बाद हाईकोर्ट ने अपने फैसले की कॉपी पूर्वी रेलवे के महाप्रबंधक समेत देशभर के रेलवे अधिकारियों को भेजने को कहा। ताकि पैसे लेकर खाली बर्थ बेचने वाले टीटीई के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। कोर्ट ने कदाचार करने वाले रेलवे कर्मचारियों के खिलाफ अधिकतम कार्रवाई करने को कहा क्योंकि टीटीई की लापरवाही ही ट्रेन में घटे इस अपराध की वजह बनी थी। कोर्ट ने कहा कि व्यक्ति सिर्फ चोरी का शिकार हुआ,लेकिन टीटीई के गैर-जिम्मेदार व्यवहार से उसकी जान चली गई। अदालत ने माना कि ऐसे तमाम मामले सामने नहीं आ पाते हैं। कोर्ट ने कहा कि यदि रेलवे कर्मचारी ईमानदारी से दायित्वों का निर्वहन करें तो यात्रियों का जीवन और सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है। विडंबना ही है कि अब जब उन्नत तकनीक के जरिये टिकटों के नियमन व सीटों के आवंटन पर पैनी नजर रखना संभव है, तो बर्थ देने में टीटीई की बड़ी भूमिका क्यों है? अक्सर मुश्किलों में सफर कर रहे यात्रियों की मजबूरी का भी टीटीई जमकर फायदा उठाते हैं। सबसे बड़ी विसंगति यह भी है कि दुनिया के सबसे बड़े रेल-नेटवर्कों में शुमार भारतीय रेलवे नेताओं की महत्वाकांक्षाओं और राजनीतिक हित साधने का माध्यम रहा है। एक समय गठबंधन सरकारों के दौर में रेल मंत्री पद के लिये बड़ी दावेदारी होती थी। अपने चुनाव क्षेत्र व राज्य के लोगों को रेलवे में भर्ती करना प्राथमिकता होती थी, लेकिन चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता और कार्यशैली में सुधार की दिशा में गंभीर कोशिश होती कभी नजर नहीं आयी। जिसके चलते रेलवे परिचालन व्यवस्था में कदाचार गहरी जड़ें जमाता रहा है। जिसकी कीमत लगातार यात्री चुका रहे हैं।

परेशान करती सरकार व समाज की चुप्पी

देश की राजधानी दिल्ली में 'कॉकरोच पार्टी' का आंदोलन जारी है। लगभग एक महीना होने को आया देश के युवाओं की टोलियों को देश के शिक्षामंत्री का इस्तीफा मांगते हुए। उनका कहना है 'नीट' की परीक्षा में होने वाली धांधली और अनेक युवाओं द्वारा की गई आत्महत्याओं की जिम्मेदारी किसी को तो लेनी होगी। सवाल शिक्षामंत्री के इस्तीफे मात्र का नहीं है, सवाल जंतर-मंतर पर प्रदर्शन की आपराधिक अनदेखी करने का भी है। इस बीच लद्दाख के जाने-माने सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षा सुधारक सोनम वांगचुक को भी जंतर-मंतर पर आमरण अनशन करते हुए सोलह दिन से अधिक हो गये हैं। और जब मैं यह शब्द लिख रहा हूं, सोशल मीडिया पर यह समाचार वायरल हो रहा है कि वांगचुक की स्थिति ठीक नहीं है। हैरानी की बात तो यह है कि युवाओं के आंदोलन के इतने दिन बीत गये, वांगचुक का स्वास्थ्य लगातार बिगड़ता जा रहा है, और सरकार के कानों पर जूं भी नहीं रेंग रही!

क्या यह सही नहीं है कि 'नीट' की परीक्षा में हुई धांधली के चलते पंद्रह से अधिक युवाओं ने आत्महत्या कर ली? इस धांधली और युवाओं की मौतों के लिए कौन जिम्मेदार है, इसका कोई समुचित जवाब सरकार ने अब तक नहीं दिया है। यह सही है कि इस बीच 'नीट' की परीक्षा फिर से करवा ली गयी है, पर क्या यह सही नहीं है कि लाखों विद्यार्थियों ने भयंकर मानसिक दबाव में यह परीक्षा फिर से दी है? कोई तो उत्तरदायी होगा इस सारी स्थिति के लिए। मामला शिक्षा में धांधली का है, तो क्यों न शिक्षामंत्री को इसके लिए उत्तरदायी माना जाये? होना तो यह चाहिए था कि देश के शिक्षामंत्री स्वयं आगे बढ़कर नैतिकता के आधार पर इस्तीफा देकर एक उदाहरण प्रस्तुत करते। पर उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया। उलटे भाजपा वाले बड़े गर्व से यह कहते नहीं थक रहे कि उनकी सरकार में पद से इस्तीफा देने की परम्परा नहीं है।

सवाल पूछा जाना चाहिए कि संबंधित मंत्री जवाबदेही क्यों न स्वीकारें। छोटी-छोटी बातों पर प्रतिक्रिया देने वाले प्रधानमंत्री कार्यालय से भी इस महत्वपूर्ण प्रकरण के बारे में कोई बयान नहीं दिया गया है। 'नीट' के लगभग बीस उम्मीदवारों की आत्महत्या क्या कोई इतना छोटा मामला है कि देश के प्रधानमंत्री को इस बारे में कुछ कहने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई? यहां यह कहना असंगत नहीं होगा कि 2021 से लेकर 2026 तक 'नीट' से जुड़े ऐसे नब्बे से अधिक मामले सामने आये हैं। इस बार लगभग 23 लाख छात्रों ने मेडिकल प्रवेश परीक्षा दी थी। सब जानते हैं कि इस परीक्षा की तैयारी कोई खेल नहीं होती। भयंकर दबाव में रहते हैं प्रतीक्षार्थी। आत्महत्या करने वाले अभागे छात्र इस दबाव को झेल नहीं पाये। कल्पना की जा सकती है कि इनके अभिभावकों पर क्या गुजर रही होगी। क्या उनकी पीड़ा सरकार के वरिष्ठ नेताओं से सांत्वना के दो शब्द पाने लायक भी नहीं थी? तो फिर यह चुप्पी क्यों?

इस चुप्पी को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। यह सही है कि देश के मुख्य न्यायाधीश द्वारा युवाओं की तुलना कॉकरोच से किये जाने के बाद कॉकरोच पार्टी के गठन को पहले हल्के में ही लिया गया था। बोस्टन में पढ़ाई कर रहे एक भारतीय युवा अभिजीत दीपके ने शायद मजाक में ही मुख्य न्यायाधीश की बात पर सोशल मीडिया से यह सवाल उछाला था कि 'यदि सारे कॉकरोच इकट्ठे हो गये तो?' इस 'तो' के उत्तर में जब हजारों की संख्या में युवा समर्थकों ने मुख्य न्यायाधीश के कथन की आलोचना करते हुए विरोध की आवाज उठायी तो बात गंभीर होती गयी। यह सही है कि आज भी संस्था की दृष्टि से इस आंदोलन को उतनी सफलता नहीं मिल पायी, जितनी मिल जानी चाहिए थी, पर जो समर्थन इसे देश में मिल रहा है, वह कम भी नहीं है। कम से कम इतना कम तो नहीं कि इसकी उपेक्षा की जाये। आखिर युवा यही तो पूछ रहे हैं कि परीक्षा में धांधली का जिम्मेदार कौन है? छात्रों की आत्महत्या करने के लिए बाध्य करने के खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं हो रही है? वांगचुंक और उनके साथ कई छात्रों को अनशन पर क्यों बैठना पड़ा है? सबसे बड़ा सवाल यह है कि हमारी समूची व्यवस्था इतनी असंवेदनशील और अनुत्तरदायी कैसे हो गयी है? एक और सवाल जो हमारी चिंता का विषय बनना चाहिए वह हमारे मीडिया की असंवेदनशीलता का है। जंतर-मंतर पर हजारों युवा देश के शिक्षामंत्री के खिलाफ लगभग एक माह से प्रदर्शन कर रहे हैं। खुले मैदान में ये छात्र गर्मी और बरसात झेल रहे हैं। भूख हड़ताल पर बैठे युवाओं में से कइयों को बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण अस्पतालों में भर्ती किया गया है। मुद्दा देश के युवाओं के भविष्य का है। लगातार प्रदर्शन हो रहे हैं। पर इस सबको लेकर देश की मुख्यधारा का मीडिया जरा भी चिंतित नहीं दिखाई दे रहा। आपराधिक चुप्पी सरकार ही नहीं बरत रही, हमारे मीडिया ने भी वैसी ही चुप्पी साध रखी है। आखिर क्यों? यह एक शर्मनाक हकीकत ही है कि यदि हमारा सोशल मीडिया सक्रिय न होता तो जंतर-मंतर के इस प्रदर्शन की जानकारी भी देश को न हो पाती।

आंदोलन कैसे चल रहा है, आंदोलन के प्रति समाज का रवैया कैसा है, सरकार की चुप्पी का रहस्य क्या है, जैसे सारे सवाल अनुत्तरित ही रह जाते यदि सोशल मीडिया इस संदर्भ में सक्रिय न होता। महीने भर से देश का युवा उद्वेलित है, राजधानी दिल्ली के साथ-साथ देश के कई अन्य शहरों में भी युवा-शक्ति सड़कों पर है, पर अखबारों में इसकी कोई जानकारी नहीं दिखती। हमारे प्रधानमंत्री की विदेश-यात्राओं में भारतीय मूल के लोगों की 'भीड़' को दिखाने की तत्परता तो हमारे मीडिया में खूब दिख रही है, पर देश की राजधानी दिल्ली में लगातार जुट रहे युवा जैसे मीडिया को दिखाई ही नहीं दे रहे! जनतांत्रिक मूल्यों और आदर्शों की दुहाई देने वाले विश्व के सबसे बड़े जनतांत्रिक देश में मीडिया का यह रुख हैरानी ही नहीं, शर्म और चिंता की बात भी है।

मीडिया का दायित्व है कि वह समाज को स्थिति की गंभीरता और भयावहता से परिचित कराये। सरकार से सवाल पूछे कि वह इस गंभीर विषय पर कुछ कहने-करने से क्यों कतरा रही है? सवाल सिर्फ शिक्षामंत्री के इस्तीफे का नहीं है, उस सारी स्थिति के आकलन का है जिसके चलते छात्रों को अपना भविष्य अंधकारमय दिखाई दे रहा है। सवाल हमारी शिक्षा नीति के औचित्य को लेकर भी उठ रहे हैं। मेडिकल या इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षाएं भी सवालों के घेरे में हैं। शिक्षामंत्री कह रहे हैं 2027 तक ये सारी परीक्षाएं कम्प्यूटर-आधारित कर दी जायेंगी। कोई उनसे यह क्यों नहीं पूछ रहा कि क्या तबतक देश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों तक कम्प्यूटर की सुविधा पहुंच जायेगी? आज स्थिति यह है कि देश के साठ प्रतिशत सरकारी स्कूलों में ही कम्प्यूटर उपलब्ध है। शेष चालीस प्रतिशत स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र क्या घाटे में नहीं रहेंगे?

विश्वनाथ सचदेव

बहरहाल, आज जंतर-मंतर पर जो कुछ हो रहा है, और उसे लेकर समाज में जो कुछ नहीं हो रहा है, वह कुल मिलाकर राष्ट्रीय चिंता का विषय होना चाहिए। होना तो यह चाहिए था कि हमारी सरकार युवा-शक्ति की परेशानी को समझने की कोशिश करती, पर उसने चुप्पी साध रखी है। होना तो चाहिए था कि हमारा मीडिया इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर मुखर होता, पर उसने भी रहस्यमय चुप्पी साधने का रास्ता अपनाया है। आखिर क्यों?

इस 'क्यों' का उत्तर मिलना ही चाहिए। देश की युवा-शक्ति को कॉकरोच कहे जाने पर यदि युवाओं को आपत्ति है तो इस आपत्ति की तह तक जाना भी सरकार का दायित्व बनता है। युवाओं का यह मुद्दा सीधा देश की बेरोजगारी से जुड़ता है। आज युवा वर्तमान से ही परेशान नहीं है, उसे अपने भविष्य की भी चिंता है। सवाल एक शिक्षामंत्री के इस्तीफे का नहीं, युवा-शक्ति के समूचे भविष्य का है। हमारी सरकार को, और हमारे मीडिया को, इसकी चिंता कब होगी?

दुनिया के लिए सबक यूरोप की असामान्य गर्मी

ग्लोबल वार्मिंग ने दुनियाभर में कहर ढाना शुरू कर दिया है। इसके कारण जलवायु परिवर्तन की समस्या और गंभीर हो गई है। अब तापमान वैश्विक औसत की तुलना में दोगुनी गति से बढ़ रहा है। इसके चलते लंबे समय तक चलने वाली हीटवेव की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं।

यूरोप की भीषण गर्मी इस बात की चेतावनी है। यूरोप की इस गर्मी को 'हीट डोम' कहें, 'हीटवेव' कहें या फिर उसे 'ओमेगा हीटवेव' की संज्ञा दी जाए, हकीकत यह है कि यूरोप भीषण गर्मी के साये में झुलस रहा है। यूरोप के कई देश 1970 के दशक की तुलना में दो महीने अधिक 'हीट स्ट्रेस' का भीषण असर झेल रहे हैं। इसके लिए ग्लोबल वार्मिंग और जीवाश्म ईंधन जिम्मेदार हैं।

मौसम विभाग के अनुसार यूरोप महाद्वीप के कई हिस्सों में हीट डोम बना हुआ है, जिससे भीषण गर्मी पड़ रही है। सूरज की गर्मी हर दिन इसमें वृद्धि करती है। नतीजतन, बारिश और ठंडी हवाएं भी राहत नहीं दे पातीं। हीट डोम बहुत ही धीमी गति से आगे बढ़ते हैं। इससे लोग लंबे समय तक गर्मी झेलने को मजबूर होते हैं। इस समय फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन और इटली की सरकारों ने रेड अलर्ट जारी किया हुआ है। पूरे स्पेन में गर्मी का अलर्ट है। बेल्जियम और नीदरलैंड में भीषण गर्मी के चलते अभी तक 3700 से ज्यादा मौतें हो चुकी हैं। स्थानीय अधिकारियों की मानें तो आने वाले दिनों में इसमें और बढ़ोतरी हो सकती है। फ्रांस के अधिकांश हिस्सों में हाई अलर्ट है। वहां के 54 विभागों में रेड अलर्ट है। यहां 1947 के बाद इस बार भीषण गर्मी देखी गई है।

हालात इतने खराब हैं कि गर्मी से राहत पाने की कोशिश में वहां जलाशयों व नदियों में गए तकरीबन 40 से ज्यादा लोगों की डूबने से मौत हो चुकी है। एफिल टावर के पास ट्रोकाडेरो फाउंटेन में गर्मी से राहत पाने के लिए लोग कूदते देखे गए हैं। यही नहीं, वहां घरों में रहने वाले 45 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की मौतों की तादाद सबसे ज्यादा, यानी 91 फीसदी है।

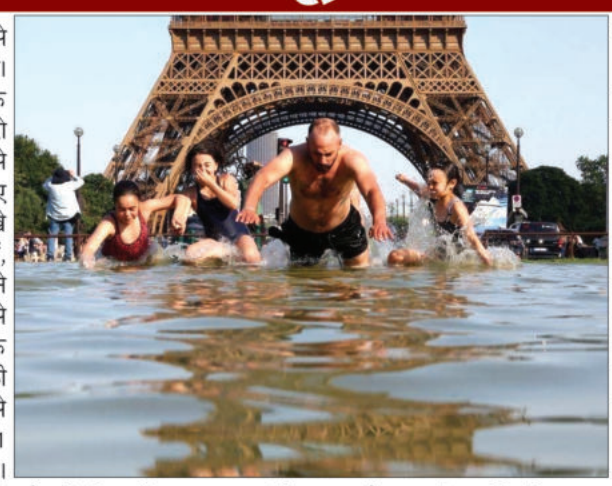

बेल्जियम और नीदरलैंड में भी सबसे ज्यादा 85 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की मौतें हुई हैं। यह हालात की भयावहता का जीता-जागता सबूत है। इन हालातों ने स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों को बढ़ा दिया है। परिवहन सुविधाओं पर भी काफी दबाव पड़ा है। लोग मानने लगे हैं कि अब ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को गंभीरता से लेने का समय आ गया है।

विशेषज्ञों के अनुसार यूरोप में गर्मी के रिकॉर्ड टूट सकते हैं। वैज्ञानिक इसे 'ओमेगा ब्लॉक' नामक दुर्लभ मौसमी पैटर्न की संज्ञा दे रहे हैं। उनके अनुसार ओमेगा ब्लॉक के चलते यूरोप के कई देशों में तापमान रिकॉर्ड स्तर तक पहुंच गया है। इससे जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है। स्कूल बंद करने पड़े हैं। बिजली आपूर्ति प्रभावित हुई है और पोल्ट्री फार्मों को भारी नुकसान उठाना पड़ा है। विशेषज्ञों के अनुसार इस असामान्य गर्मी के पीछे 'ओमेगा ब्लॉक' नामक मौसमी पैटर्न है, जिसमें उच्च दबाव का क्षेत्र ग्रीक अक्षर 'ओमेगा' के आकार का बन जाता है। यह गर्म हवा को लंबे समय तक एक ही इलाके में रोककर रखता है, जिससे अमूमन तापमान सामान्य से 18 डिग्री सेल्सियस तक अधिक हो सकता है।

फ्रांस के दक्षिण-पश्चिमी शहर पिसोस में तापमान 44.3 डिग्री सेल्सियस को पार कर गया है। उत्तर-पश्चिमी शहर ब्रिटनी में बिजली आपूर्ति ठप रही है। वहीं, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों को भी उत्पादन में सात फीसदी की कटौती करने को बाध्य होना पड़ा है। इसका कारण शीतलन के लिए वहां पर्याप्त पानी का अभाव था। इससे बुनियादी ढांचे को भारी नुकसान हुआ है और स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी दबाव पड़ा है। वहीं, इटली में सोलह शहरों में उच्च स्तर का हाई अलर्ट जारी करना पड़ा है। ब्रिटेन में बढ़ते तापमान के कारण स्कूलों को बंद करना पड़ा। फ्रांस में कारों में अत्यधिक तापमान के कारण कई छोटे बच्चे मौत के मुंह में चले गए। यहां के ब्रिटनी और पेज दे ला लोआर इलाके के अनेक पोल्ट्री फार्मों में अत्यधिक गर्मी से लाखों पक्षियों की मौत हो गई।

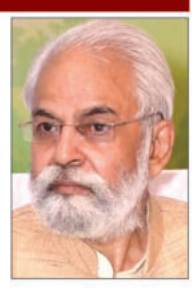

ज्ञानेंद्र रावत

दरअसल, अध्ययनों ने एक साल पहले ही चेता दिया था कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण तीन गुना अधिक भीषण गर्मी पड़ने की आशंका है। नेचर रिव्यू अर्थ एंड एनवायरमेंट में प्रकाशित किंग्स कॉलेज के अध्ययन के निष्कर्ष के अनुसार, स्वस्थ और युवा वयस्कों को बढ़ती गर्मी के चलते होने वाली कठिनाई की सीमा तीन गुना होने की संभावना व्यक्त की गई थी। अध्ययनकर्ताओं ने चेतावनी दी थी कि जिन क्षेत्रों में अत्यधिक गर्मी जैसे हालात होंगे, वहां वृद्ध लोगों को गर्मी से 35 फीसदी अधिक खतरा होगा। अध्ययनकर्ता प्रोफेसर टॉम मैथ्यूज के अनुसार, यदि वैश्विक तापमान में वृद्धि निर्धारित मानक के अनुपात में दो डिग्री तक पहुंच जाती है तो इसके घातक परिणाम होंगे। इससे वृद्ध लोगों को झुलसाने वाली गर्मी की सीमाएं बढ़ेंगी। वहीं, इससे युवा आने वाले समय में अधिक जूझते नजर आएंगे।

शोधकर्ताओं का दावा है कि असहनीय गर्मी में शरीर का मुख्य तापमान छह घंटे के भीतर 47 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाता है। यह स्थिति खतरनाक हो सकती है। सरकारों को अब ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को गंभीरता से लेना होगा।

आंतरिक संरचना की मजबूती से सुधरेगी आर्थिकी

हाल ही में अमेरिका से सैन्य टकराव के बाद ईरान द्वारा होर्मुज स्ट्रेट के बंद किए जाने से कच्चे तेल के दाम बढ़े हैं और बाजार जोखिमें भी बढ़ गई हैं। इससे एक बार फिर भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी प्रतिकूल असर बढ़ने लगा है। एशियाई विकास बैंक की रिपोर्ट में कहा गया है कि पश्चिम एशियाई संकट और लॉजिस्टिक कीमतों में बढ़ोतरी का भारत की विकास दर पर प्रतिकूल असर होगा। ऐसे में एडीबी ने भारत के लिए वित्त वर्ष 2026-27 के लिए पूर्व निर्धारित 6.9 प्रतिशत विकास दर को घटाकर 6.6 प्रतिशत कर दिया है। इसी तरह आईएमएफ ने अपनी रिपोर्ट में भारत की विकास दर का अनुमान घटाकर 6.4 प्रतिशत कर दिया है। आईएमएफ का मानना है कि ऊर्जा की ऊंची कीमतें भारत में आर्थिक चुनौतियां बढ़ा सकती हैं।

पिछले वित्त वर्ष 2025-26 में भारत ने 7.7 प्रतिशत की शानदार दर से वृद्धि दर्ज की थी, जो कि 2024-25 की 7.1 प्रतिशत की दर से काफी बेहतर थी। निरूसंदेह इस समय वैश्विक आर्थिक चुनौतियों और घरेलू आर्थिक मुश्किलों के बीच अर्थव्यवस्था को गतिशील रखना और विकास दर बढ़ाना चुनौती है। इस चक्रव्यूह से निकलने के लिए सरकार को 'सुधार, प्रदर्शन और परिवर्तन' के मंत्र को और अधिक आक्रामक ढंग से उपयोग में लाना होगा। वैश्विक झटके और तेल की बढ़ती कीमतों के बीच भारत को अपनी समष्टि-आर्थिक स्थिरता बनाए रखने के लिए अपनी रणनीतियों में बदलाव करना होगा। तेल की वैश्विक कीमतों में उछाल के कारण भारतीय रिजर्व बैंक के सामने असमंजस की स्थिति पैदा हो गई है। केंद्रीय बैंक को अब महंगाई को नियंत्रण में रखने के साथ-साथ विकास की गति को थमने से बचाना होगा।

ऐसे में आर्थिक गतिविधियों को सहारा देने के लिए सरकार को अपने पूंजीगत व्यय को लक्ष्य के अनुरूप तेजी से कारगर बनाना होगा। बुनियादी ढांचा परियोजनाओंकृजैसे रेलवे, राष्ट्रीय राजमार्ग, नए बंदरगाहों और लॉजिस्टिक्स नेटवर्क में निवेश को प्राथमिकता देनी होगी। बुनियादी ढांचे में सरकारी निवेश बढ़ने से इस्पात, सीमेंट और निर्माण जैसे मुख्य क्षेत्रों में मांग बनी रहती है, जिससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर नए रोजगार पैदा होते हैं और अर्थव्यवस्था का चक्र घूमता रहता है। वैश्विक आपूर्ति शृंखला में नए सिरे से व्यवधान आने की आशंका को देखते हुए भारत को घरेलू विनिर्माण पर अपनी निर्भरता बढ़ानी होगी। उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन योजनाओं का दायरा बढ़ाकर उन क्षेत्रों को शामिल करना चाहिए जो आयात पर अत्यधिक निर्भर हैं।

अब बढ़ती आर्थिक चुनौतियों के बीच मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) को भी ढाल बनाना होगा। अप्रैल-मई 2026 में भारत का निर्यात पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले लगभग 15 प्रतिशत बढ़ा है। वैश्विक अनिश्चितता के इस दौर में भारत द्वारा तेजी से बढ़ाए जा रहे 'मुक्त व्यापार समझौते' नए बाजार खोलने में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाले साबित हो सकते हैं। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अनुसार, भारत आगामी 10 महीनों में 9 नए व्यापार समझौतों को धरातल पर उतारने की तैयारी में है। 1 जून, 2026 से भारत और ओमान के बीच वृहद आर्थिक एवं साझेदारी समझौता पूरी तरह लागू हो चुका है। इससे ओमान में भारत के 99 प्रतिशत से अधिक उत्पादों को शुल्क मुक्त प्रवेश मिल रहा है।

ब्रिटेन के साथ बहुप्रतीक्षित मुक्त व्यापार समझौते का क्रियान्वयन इसी माह 15 जुलाई से शुरू होने जा रहा है। यह भारतीय कपड़ा, फार्मा और विनिर्माण क्षेत्र के लिए बड़ा संवर्धक साबित होगा। इसके साथ ही न्यूजीलैंड और यूरोपीय संघ के साथ एफटीए शीघ्र कार्यान्वित होगा। अमेरिका के साथ भी वार्ता अंतिम दौर में है। मॉरीशस, संयुक्त अरब अमीरात, ऑस्ट्रेलिया और यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ के साथ समझौतों के लाभ जमीन पर दिखने लगे हैं। इसके अलावा कनाडा, इस्राइल, रूस और पेरू जैसी अर्थव्यवस्थाओं के साथ भी व्यापार वार्ताओं में तेजी लाई गई है।

डॉ. जयंतीलाल भंडारी

निश्चित रूप से बाहरी झटकों से निपटने के लिए भारत ने अपनी आंतरिक संरचना को पहले से मजबूत किया है। देशभर में जमीनी स्तर पर चार नई श्रम संहिताओं के तहत लागू हुए नए सरल श्रम कानून विनिर्माण क्षेत्र में 'व्यापार सुगमता' को बढ़ाने में मील का पत्थर साबित हो रहे हैं। इनसे न केवल विदेशी निवेश आकर्षित हो रहा है, बल्कि वैश्विक कंपनियों के लिए भारत में काम करना आसान हुआ है।

यदि सरकार इस वर्ष के बजट में विनिवेश के लिए निर्धारित 80 हजार करोड़ रुपये के लक्ष्य को समय पर प्राप्त कर लेती है, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के नियमों को और अधिक उदार बनाती है तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को नई ऊंचाइयों पर ले जाती है, तो भारत की आर्थिक गतिशीलता को बचाया जा सकेगा।

खजाना बलि मांग रहा है, कुल्हाड़ी से कर दी दोस्त की हत्या

रायसेन।

सोना निकालने निकले थे... लेकिन जमीन के नीचे अपने ही दोस्त को दफना आए। यह हॉरर स्टोरी मध्य प्रदेश के रायसेन की है। यह ऐसा हत्याकांड है, जिसमें अंधविश्वास, लालच और तंत्र-मंत्र ने मिलकर एक इंसान की जान ले ली। पुलिस का दावा है कि तीन लोग गड़े धन (दफीना) की तलाश में जंगल पहुंचे थे। तांत्रिक क्रिया शुरू हुई। अगरबत्ती जलाई गई। फिर अचानक एक आवाज आई- धरती गर्म हो रही है... दफीना बलि मांग रहा है। इसके कुछ ही सेकंड बाद कुल्हाड़ी चली और विजय जैन नाम के बिजनेसमैन की जिंदगी खत्म हो गई। अब इस मामले में पिता-पुत्र समेत तीन आरोपी गिरफ्तार हो चुके हैं।

रायसेन में रहने वाले विजय जैन 7 जुलाई की शाम घर से निकले थे। परिवार को लगा कि किसी काम से गए होंगे। लेकिन जब काफी देर तक उनका कोई पता नहीं चला तो 9 जुलाई को गैरतगंज थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई गई। परिवार को नहीं पता था कि जिस दोस्त के साथ विजय निकले थे, वही दोस्त उनकी जान ले लेंगे। जांच में पुलिस को पता चला कि विजय की घटना वाले दिन सबसे ज्यादा बातचीत प्रहलाद साहू से हुई थी।

आरोप है कि प्रहलाद ने विजय को बुलाया। विजय मोबाइल बंद करके उसके साथ बाइक से परासिया नदी की तरफ निकल गए। वहां पहले से प्रहलाद का बेटा टीकम साहू और करीम खान फावड़ा और कुल्हाड़ी लेकर मौजूद थे।

पुलिस के मुताबिक, रात में नदी किनारे कथित तांत्रिक अनुष्ठान शुरू हुआ। अगरबत्ती जलाई गई। कुछ देर तक मंत्रोच्चार जैसा माहौल बनाया गया। फिर मुख्य आरोपी ने कथित तौर पर कहा कि धरती गर्म हो रही है... दफीना बलि मांग रहा है। पुलिस का आरोप है कि इतना कहते ही उसने इशारा किया। करीम खान ने कुल्हाड़ी उठाई और विजय की गर्दन पर वार कर दिया। विजय को प्रहलाद और उसका बेटा टीकम पकड़े हुए थे। कुछ ही पलों में विजय की मौत हो गई।

हत्या के बाद तीनों आरोपी शव को करीब 100 मीटर दूर ले गए। वहां गड्ढा खोदा गया और विजय के शव को मिट्टी में दबा दिया गया। जिस जमीन से उन्हें खजाने की उम्मीद थी, उसी जमीन में उन्होंने अपने साथी को दफना दिया।

अगर इस केस में किसी ने सबसे बड़ी गवाही दी, तो वह था मोबाइल फोन। कॉल डिटेल रिकॉर्ड, मोबाइल लोकेशन और डिजिटल साक्ष्यों ने पुलिस को सीधे आरोपियों तक पहुंचा दिया। शुरुआत में प्रहलाद ने पुलिस को मकान खरीदने-बेचने की कहानी सुनाई, लेकिन तकनीकी जांच के सामने उसकी कहानी ज्यादा देर टिक नहीं पाई।

पुलिस ने इस मामले में प्रहलाद साहू (64), उसके बेटे टीकम साहू (34) और करीम खान (35) को गिरफ्तार किया है। तीनों के खिलाफ हत्या समेत अन्य धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। उनकी निशानदेही पर हत्या में इस्तेमाल की गई कुल्हाड़ी, फावड़ा, बाइक और मोबाइल फोन भी बरामद किए गए हैं। तीनों को अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया है। पुलिस का कहना है कि सख्ती से पूछताछ करने पर आरोपियों ने हत्या की बात स्वीकार कर ली।

आरोपियों की निशानदेही पर हत्या में इस्तेमाल की गई कुल्हाड़ी, फावड़ा, बाइक और तीनों के मोबाइल फोन भी जब्त किए हैं। मृतक विजय जैन के शव का पोस्टमार्टम कराने के बाद अंतिम संस्कार भोपाल में किया गया, जहां उनका परिवार रहता है। हालांकि, पुलिस मामले के हर पहलू की जांच कर रही है। यह भी देखा जा रहा है कि कहीं हत्या के पीछे कोई और वजह तो नहीं थी और आरोपियों के बयान उपलब्ध साक्ष्यों से कितना मेल खाते हैं।

9 रेल्वे स्टेशनों पर होने वाला है बड़ा बदलाव

माही की गूंज, रतलाम।

पश्चिम रेलवे के रतलाम मंडल ने यात्रियों के पूछताछ केंद्रों का संचालन निजी एजेंसी को सौंपने का फैसला किया है। 20 जुलाई से मंडल के नौ प्रमुख स्टेशनों पर 10 पूछताछ काउंटर आउटसोर्स एजेंसी संचालित करेगी। इसके साथ ही रतलाम मंडल ऐसा करने वाला पश्चिम रेलवे का पहला मंडल बन जाएगा। दावा है कि इससे यात्रियों को चौबीसों घंटे आधुनिक पूछताछ सुविधा मिलेगी, जबकि वर्तमान में यहां तैनात 37 रेल कर्मचारियों को उनकी मूल जिम्मेदारियों में लगाया जाएगा।

मंडल प्रशासन ने इंदौर, रतलाम, उज्जैन, दाहोद, नीमच, चित्तौड़गढ़, देवास, नागदा और डॉ. अंबेडकर नगर स्टेशन के पूछताछ केंद्रों के संचालन के लिए हैदराबाद की मेगा कंस्ट्रक्शन कंपनी का चयन किया है। निविदा प्रक्रिया पूरी होने के बाद कार्यादेश जारी कर दिया गया है।

मंडल रेल प्रबंधक अश्विनी कुमार के मार्गदर्शन में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक हिना वी. केवलरामानी, मंडल वाणिज्य प्रबंधक राजेश मथुरिया और मुख्य वाणिज्य निरीक्षक मिक्की सक्सेना ने कार्ययोजना तैयार की। फिलहाल यह व्यवस्था एक वर्ष के लिए लागू की जा रही है।

रेलवे देगी प्रशिक्षण

रेलमंडल जनसंपर्क अधिकारी मुकेश कुमार के अनुसार एजेंसी करीब 40 प्रशिक्षित कर्मचारियों की तैनाती करेगी। सभी कर्मचारियों को रेलवे की कार्यप्रणाली का प्रशिक्षण दिया जाएगा। वे यात्रियों को ट्रेनों और स्टेशन संबंधी जानकारी देने, कोच गाइडेंस, इंडिकेटर बोर्ड संचालन, स्वचालित व मैनुअल अनाउंसमेंट तथा दिव्यांग और वरिष्ठ नागरिक यात्रियों की सहायता का कार्य करेंगे।

टिकट जांच में तैनात होगा वर्तमान स्टाफ

अभी इन पूछताछ केंद्रों पर टिकट चेकिंग एवं रिजर्वेशन कैडर के 37 कर्मचारी कार्यरत हैं। टिकट जांच स्टाफ की कमी को देखते हुए मंडल प्रशासन ने उन्हें उनकी मूल ड्यूटी में लगाने का निर्णय लिया है। इससे ट्रेनों में टिकट जांच व्यवस्था मजबूत होगी और रेलवे के राजस्व में भी वृद्धि की उम्मीद है।

बारिश थमने से खेतों में अंकुरण हुआ प्रभावित

माही की गूंज, रतलाम।

जिले में करीब एक सप्ताह से वर्षा का दौर थमा हुआ है। लगातार मौसम साफ रहने और वर्षा नहीं होने से किसानों की चिंता बढ़ने लगी है। खरीफ सीजन की बोवनी कर चुके किसानों को अब अच्छी वर्षा का इंतजार है।

खेतों में पर्याप्त नमी नहीं मिलने के कारण कुछ स्थानों पर बीजों का अंकुरण प्रभावित हुआ है। ऐसे खेतों में किसानों को दोबारा बोवनी करनी पड़ रही है। हालांकि कृषि विभाग के अनुसार जिले में फिलहाल बड़े पैमाने पर दोबारा बोवनी जैसी स्थिति नहीं बनी है।

जिले में खरीफ फसलों की बोवनी का लक्ष्य 3.37 लाख हेक्टेयर निर्धारित किया गया है। इसके मुकाबले अब तक करीब 3.10 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बोवनी हो चुकी है। इस तरह जिले में अधिकांश क्षेत्र में खरीफ फसलों की बोवनी पूरी हो गई है। किसान अब फसलों की बढ़वार के लिए वर्षा का इंतजार कर रहे हैं। लंबे समय तक मौसम साफ रहने की स्थिति बनी रही तो खेतों में नमी की कमी से फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

पर्याप्त नमी के अभाव में वापस बोवनी करनी पड़ेगी

सहायक संचालक कृषि भीका वास्के ने बताया कि जिले में इक्का-दुक्का स्थानों पर ही दोबारा बोवनी की स्थिति बनी है। कहीं-कहीं पर्याप्त नमी के अभाव में बीजों का अंकुरण नहीं होने से किसानों को फिर से बोवनी करनी पड़ रही है, लेकिन जिलेभर में व्यापक स्तर पर ऐसी स्थिति नहीं है। आगामी दो से चार दिन में अच्छी वर्षा होने पर स्थिति सामान्य हो सकती है।

बारिश के रुकने से बढ़ी किसानों की चिंता

कृषि विभाग ने वर्तमान मौसम को देखते हुए किसानों को सावधानी बरतने की सलाह दी है। विभाग के अनुसार अभी खरपतवार नाशक दवाओं का छिड़काव नहीं किया जाए। इसके बजाय खेतों में डोरे चलाकर खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है। इससे खेत की नमी को संरक्षित रखने में भी मदद मिलेगी।

जिले में खरीफ की बोवनी लगभग अंतिम चरण में पहुंच चुकी है, लेकिन वर्षा में आए लंबे अंतराल ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। अब किसानों की निगाहें आसमान पर टिकी हैं। समय पर वर्षा होने से अंकुरित फसलों को राहत मिलेगी और खरीफ फसलों की बढ़वार भी सामान्य हो सकेगी। सोमवार सुबह आठ बजे समाप्त हुए बीते चौबीस घंटों के दौरान जिले में कहीं भी वर्षा नहीं हुई। जिला गत वर्ष की तुलना में पीछे हैं। गत वर्ष अब तक जिले में औसत 341 मिमी वर्षा हुई थी। रविवार के मुकाबले सोमवार को अधिकतम तापमान में 0.8 डिग्री सेल्सियस की गिरावट व न्यूनतम तापमान में 0.2 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी दर्ज की गई। सुबह की आर्द्रता 83 प्रतिशत व शाम की 78 प्रतिशत रही, जो रविवार को क्रमशरू 88 व 72 प्रतिशत थी।

ट्विशा शर्मा मौत मामले में कोर्ट का फैसला

भोपाल। ट्विशा शर्मा की मौत के मामले में आरोपी समर्थ सिंह और उनकी मां गिरिबाला सिंह की न्यायिक हिरासत 28 जुलाई तक बढ़ा दी गई है। सीबीआई ने आरोप लगाया था कि वे आवाज के नमूने (वॉयस सैंपल) देने में सहयोग नहीं कर रहे थे। एक एजेंसी के मुताबिक सुनवाई के दौरान मां-बेटे की जोड़ी वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए भोपाल जिला और सत्र न्यायालय के सामने पेश हुई।

12 मई को ससुराल में फंदे से लटकी मिली थी ट्विशा

ट्विशा 12 मई को भोपाल में अपने ससुराल में फंदे से लटकी हुई पाई गई थीं। बाद में उनके पति समर्थ सिंह और उनकी सास गिरिबाला सिंह (जो पूर्व जिला जज हैं) को दहेज के लिए परेशान करने, मानसिक उत्पीड़न और घरेलू हिंसा के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। सीबीआई ने कहा कि पिछली सुनवाई के दौरान दोनों आरोपियों ने आवाज के नमूने देने पर कोई आपत्ति नहीं जताई थी, लेकिन जब सीबीआई की टीम 6 जुलाई को जेल गई, तो उन्होंने सहयोग नहीं किया।

ट्विशा के परिवार के वकील अंकुर पांडे ने बताया कि इसी आधार पर सीबीआई ने अदालत से उनकी न्यायिक हिरासत 28 जुलाई तक बढ़ाने का अनुरोध किया था, जिसे अदालत ने मंजूर कर लिया। उन्होंने कहा कि सीबीआई ने अदालत को बताया कि आवाज के नमूने न मिलने से जांच में बाधा आ रही है क्योंकि दोनों आरोपी उन्हें देने में आनाकानी कर रहे थे।

एम्स की पोस्टमार्टम रिपोर्ट का अध्ययन कर रहे हैं अधिकारी

उधर, हाल ही में ट्विशा केस में दूसरी पोस्टमार्टम रिपोर्ट सीबीआई को 11 जुलाई को मिली। अधिकारियों के मुताबिक एम्स की मेडिकल पैनल की रिपोर्ट का अध्ययन और विश्लेषण किया जा रहा है। ट्विशा के परिवार ने पहली पोस्टमार्टम रिपोर्ट पर सवाल उठाए थे, जिसके बाद एम्स की टीम ने दूसरा पोस्टमार्टम किया था।

अधिकारियों ने बताया कि एम्स की रिपोर्ट में कहा गया है कि फंदे के लिए इस्तेमाल किए गए जिम्नास्टिक बेल्ट पर त्वचा के ऊतक (स्किन टिश्यू) मिले हैं, जो शरीर पर मिले चोट के निशानों से मेल खाते हैं। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि इस जिम्नास्टिक बेल्ट में एक धातु (मेटल) की रिंग भी लगी हुई थी। हालांकि अभी सीबीआई ने ये साफ नहीं किया है कि मामला आत्महत्या का ही है या कुछ और...जांच जारी है।

अनूठी संकल्प यात्रा, 36 दिन में 108 महादेव अभिषेक

माही की गूंज, रतलाम।

शहर में अनूठी संकल्प यात्रा में सवार 18 से 25 वर्ष के युवा नित्य ब्रह्ममुहूर्त में महादेव के मंदिरों की सफाई और अभिषेक पूजन वंदन के कार्य में जुटे हैं। यह यात्रा 36 दिवसीय होकर 108 महादेव मंदिर पर पहुंचकर पूर्ण होगी। धर्म, संस्कृति, सेवा और सनातन संस्कारों का जागरण का उद्देश्य लिए चलाए जा रहे महादेव मंदिरों की पूजन अभिषेक संकल्प यात्रा की पूर्णाहुति 2 अगस्त को होगी। मंगलवार ब्रह्ममुहूर्त में बिलपांक स्थित अत्यंत प्राचीन पांडवों द्वारा पूजित विरूपाक्ष महादेव मंदिर में दिव्य शिवाभिषेक किया। देर रात से ही शिवभक्त बड़ी संख्या में एकत्र होने लगे थे।

अखंड सुंदरकांड पाठ भी

रुद्र महाकाल सेवा समिति की ओर से 36 दिवसीय 108 महादेव मंदिर पूजन संकल्प यात्रा का आयोजन किया जा रहा हैं। हर दिन वैदिक मंत्रोच्चार, हर-हर महादेव और जय श्री राम के उद्घोष के साथ भगवान शिव का विधिवत अभिषेक किया जा रहा हैं।

विरूपाक्ष महादेव को 56 भोग अर्पित

विरूपाक्ष महादेव को 56 भोग अर्पित कर पूजन-अर्चन किया। समिति ने इस क्रम में 52वें स्फटिकेश्वर, 53वें पारदेश्वर और 54वें विरूपाक्ष महादेव मंदिर में भी शिवाभिषेक किया। 23वें दिन बिलपांक स्थित रुद्राश मारुति हनुमान मंदिर में अखंड सुंदरकांड पाठ भी आयोजित हुआ।

संतों के सान्निध्य में पूर्णाहुति

समिति प्रमुख ऋषभ सोनी ने बताया कि यह संकल्प यात्रा 22 जून को गढ़ कैलाश महादेव मंदिर से शुरू हुई थी। इस धार्मिक अनुष्ठान की पूर्णाहुति 2 अगस्त को चंपा विहार में होगी। इसमें आचार्य विशोकानंद भारती बीकानेर, योगीपीर रामनाथ उज्जैन, पंडित युवराज पांडेय छत्तीसगढ़ तथा अंबाजी धाम, निपानिया के गुरु मौजूद रहेंगे।

युवा वर्ग प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में कर रहे अभिषेक

सोनी ने कहा कि समिति के 18 से 25 वर्ष आयु वर्ग के युवा सेवक प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में शिव अभिषेक और सुंदरकांड पाठ कर सनातन संस्कृति के संरक्षण का अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं। समिति ने नागरिकों से पूर्णाहुति महोत्सव में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

धीरेंद्र शास्त्री के भाई ने मारी गोली...!

छतरपुर। मध्य प्रदेश के छतरपुर में पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के भाई पर मारपीट और फायरिंग के आरोप लगे हैं। पुलिस ने धीरेंद्र शास्त्री के भाई शालिग्राम गर्ग के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है, जिसमें एक किसान के साथ मारपीट, हवाई फायरिंग और जमीन विवाद को लेकर धमकाने के आरोप लगाए हैं। पुलिस का कहना है कि शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

पुलिस के मुताबिक, घटना 14 जुलाई को छतरपुर जिले के राजनगर थाना क्षेत्र के कोंडा गांव की है। यहां रहने वाले मोतीलाल का आरोप है कि वह गांव में अपने साथियों के साथ मौजूद था। इसी दौरान शालिग्राम गर्ग अपने साथियों सतीश, आशीष और एक अन्य व्यक्ति के साथ वहां पहुंचा।

आरोप है कि पहले गाली-गलौज हुई, फिर लाठी-डंडों से मारपीट की गई। शिकायत में यह भी कहा गया है कि इस दौरान तीन राउंड फायरिंग की गई। मारपीट में मोतीलाल घायल हो गया, जिसके बाद उसे इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया।

घटना के कुछ वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। वीडियो में कुछ लोगों के बीच विवाद और धक्का-मुक्की होती दिखाई दे रही है। पुलिस का कहना है कि वायरल वीडियो को भी जांच का हिस्सा बनाया गया है।

छतरपुर के एसपी रजत सकलेचा ने बताया कि शिकायत मिलने के बाद शालिग्राम गर्ग समेत चार लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। पुलिस सभी पक्षों के बयान दर्ज कर रही है और वायरल वीडियो सहित अन्य साक्ष्यों की जांच की जा रही है। जांच में जो तथ्य सामने आएंगे, उसी आधार पर आगे की कार्रवाई होगी। यह विवाद पुरानी जमीन को लेकर बताया जा रहा है। शिकायतकर्ता का आरोप है कि इसी विवाद के चलते मारपीट और फायरिंग की घटना हुई। हालांकि, पुलिस का कहना है कि अभी जांच जारी है और विवाद की असली वजह जांच पूरी होने के बाद ही साफ हो पाएगी। शालिग्राम गर्ग का नाम इससे पहले भी विवादों में सामने आ चुका है। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

रात्रि गश्त की मांग पर थाने में बवाल

माही की गूंज, रतलाम।

स्टेशन रोड थाना प्रभारी जितेंद्र सिंह जादौन पर अभद्र व्यवहार का आरोप लगाते हुए मंगलवार देर रात वार्ड क्रमांक 25 की भाजपा पार्षद आयुषी जलज सांखला के समर्थन में महापौर प्रहलाद पटेल, एमआईसी सदस्य, भाजपा पदाधिकारी और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता स्टेशन रोड थाने पहुंच गए। जनप्रतिनिधियों ने थाना प्रभारी को लाइन हाजिर करने की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन किया। मामला बढ़ने पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (शहर) राकेश पंद्रो मौके पर पहुंचे और जनप्रतिनिधियों को रात्रिकालीन गश्त बढ़ाने तथा शिकायत की जांच कराने का आश्वासन देकर मामला शांत कराया।

पार्षद आयुषी सांखला का आरोप है कि उनके वार्ड के शुभ विहार, राम रेसिडेंसी गेट सहित आसपास के क्षेत्र में पिछले कई दिनों से देर रात करीब 1.30 से 3 बजे के बीच असामाजिक तत्व हथियार लेकर घूम रहे हैं। इससे क्षेत्र के रहवासियों में भय का माहौल है। उन्होंने बताया कि पिछले दो-तीन दिनों से वे लगातार सीएसपी और थाना प्रभारी को फोन कर क्षेत्र में पुलिस गश्त बढ़ाने की मांग कर रही थीं, लेकिन स्थिति में सुधार नहीं हुआ।

मंगलवार देर रात पार्षद आयुषी सांखला, भाजपा मंडल अध्यक्ष नीलेश गांधी, राजेश कटारिया और क्षेत्र के रहवासियों के साथ स्टेशन रोड थाने पहुंचीं। उनका कहना है कि वे विरोध करने नहीं, बल्कि पुलिस का सहयोग लेकर क्षेत्र में स्थायी गश्त सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से गई थीं। आरोप है कि शिकायत सुनने के बजाय थाना प्रभारी ने उनके और मंडल अध्यक्ष के साथ अभद्र व्यवहार किया।

पार्षद के अनुसार, थाना प्रभारी ने कहा, ष्क्या आपके कहने से पुलिस पॉइंट लगाऊंगा?ष् इसी बात को लेकर थाना प्रभारी और जनप्रतिनिधियों के बीच तीखी बहस हो गई।

घटना की जानकारी मिलते ही महापौर प्रहलाद पटेल, एमआईसी सदस्य, भाजपा के दो मंडल अध्यक्ष, पदाधिकारी और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता थाने पहुंच गए। जनप्रतिनिधियों ने थाना प्रभारी के विरुद्ध कार्रवाई और उन्हें लाइन हाजिर करने की मांग को लेकर विरोध जताया। क्षेत्रवासियों ने भी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के समक्ष देर रात हथियार लेकर घूमने वाले युवकों की शिकायत दोहराते हुए सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने और नियमित गश्त की मांग की।

आमजन की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है

मामला बढ़ने पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (शहर) राकेश पंद्रो स्टेशन रोड थाने पहुंचे। उन्होंने जनप्रतिनिधियों, क्षेत्रवासियों और पुलिस अधिकारियों से चर्चा की। एएसपी ने क्षेत्र में रात्रिकालीन पुलिस गश्त बढ़ाने का आश्वासन देते हुए कहा कि आमजन की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने शिकायत की जांच कर नियमानुसार कार्रवाई किए जाने का भरोसा भी दिलाया, जिसके बाद प्रदर्शन समाप्त हो गया।

जनता की सुरक्षा के लिए पुलिस का सहयोग मांगने गई थी

पार्षद आयुषी सांखला ने कहा कि वे क्षेत्र की जनता की सुरक्षा के लिए पुलिस का सहयोग मांगने गई थीं। उनका आरोप है कि यदि जनप्रतिनिधियों के साथ इस प्रकार का व्यवहार होता है तो आम नागरिकों, विशेषकर महिलाओं की शिकायतों को किस तरह सुना जाता होगा, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि थाना प्रभारी के विरुद्ध उचित कार्रवाई होने तक उनका विरोध जारी रहेगा।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (शहर) राकेश पंद्रो ने बताया कि जनप्रतिनिधियों की शिकायत पर क्षेत्र में रात्रिकालीन गश्त बढ़ाई जाएगी। पुलिस पूरे मामले की जांच कर नियमानुसार कार्रवाई करेगी।

22 हजार विद्यार्थियों की परीक्षा अटकी, एनएसयूआई और युवक कांग्रेस का प्रदर्शन

माही की गूंज, खरगोन।

क्रांति सूर्य टंट्या मामा भील विश्वविद्यालय में परीक्षाओं के आयोजन में हो रही देरी के विरोध में बुधवार को भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन (एनएसयूआई) और युवक कांग्रेस ने प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने शहर में रैली निकालकर अनुविभागीय अधिकारी कार्यालय परिसर में कुलपति एवं प्रदेश सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। इसके बाद राज्यपाल के नाम तहसीलदार दिनेश सोनारटिया को ज्ञापन सौंपा।

संगठन का आरोप है कि विश्वविद्यालय की अव्यवस्था और प्रशासनिक लापरवाही के कारण करीब 22 हजार विद्यार्थियों का भविष्य प्रभावित हो रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि 15 दिनों के भीतर परीक्षाएं आयोजित नहीं कराई गईं तो विश्वविद्यालय में तालाबंदी की जाएगी।

एनएसयूआई जिला अध्यक्ष नीलेश सागोरे ने बताया कि बीए, बीकॉम, बीएससी सहित अन्य स्नातक परीक्षाएं अप्रैल माह में होना थीं, लेकिन अब तक न तो परीक्षा कार्यक्रम घोषित किया गया है और न ही समय-सारणी जारी की गई है। इसके कारण विश्वविद्यालय से संबद्ध 86 महाविद्यालयों के करीब 22 हजार विद्यार्थियों की पढ़ाई और नए शैक्षणिक सत्र में प्रवेश प्रक्रिया प्रभावित हो रही है।

संगठन के अनुसार वर्ष 2024 में स्थापित क्रांति सूर्य टंट्या मामा भील विश्वविद्यालय प्रारंभ से ही कर्मचारियों की कमी, भवन एवं संसाधनों के अभाव तथा प्रशासनिक लापरवाही जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। इसका सीधा असर खरगोन, बड़वानी, बुरहानपुर, अलीराजपुर और खंडवा जिले के विद्यार्थियों पर पड़ रहा है।

एनएसयूआई और युवक कांग्रेस ने परीक्षा में हो रही देरी की उच्चस्तरीय जांच कर जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। संगठन का आरोप है कि परीक्षा संबंधी जानकारी मांगने पर विश्वविद्यालय प्रशासन स्पष्ट जवाब देने के बजाय टालमटोल कर रहा है।

संगठन ने चेतावनी दी कि यदि जल्द समाधान नहीं किया गया तो छात्रहित में उग्र आंदोलन किया जाएगा। प्रदर्शन के दौरान सिद्धार्थ वर्मा, आवेश खान, नोबल कुशवाह सहित एनएसयूआई और युवक कांग्रेस के अनेक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बीएससी छात्र को एपीके फाइल भेजकर 59 हजार की ठगी

माही की गूंज, खंडवा।

सेफ फिलक अभियान चलाए जाने के बावजूद जिले में साइबर ठगी के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। एक बीएससी छात्र को व्हाट्सएप पर आरटीओ चालान के नाम से एपीके फाइल भेजकर 59 हजार रुपए की ठगी कर ली गई। मामले में पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कोतवाली पुलिस के अनुसार फरियादी करण पिता गुलसिंह डूडवे निवासी भीकनगांव, जिला खरगोन है। वह वर्तमान में खंडवा की एक निजी विश्वविद्यालय में बीएससी एग्रीकल्चर की पढ़ाई कर रहा है तथा गणेश तलाई क्षेत्र में किराए के मकान में रहता है।

करण ने पुलिस को बताया कि 8 जुलाई की सुबह करीब 11रू45 बजे उसके मोबाइल पर दो बार राशि निकासी के संदेश प्राप्त हुए। पहला लेनदेन 49 हजार 999 रुपए और दूसरा 8 हजार 999 रुपए का था। इसके बाद उसने अपने बैंक खाते का शेष धनराशि विवरण देखा तो खाते से कुल 59 हजार 466 रुपए की धोखाधड़ी होना सामने आया। पीड़ित के अनुसार आरटीओ चालान संबंधी एपीके फाइल डाउनलोड करने के बाद यह घटना हुई।

पंधाना थाना पुलिस ने 50 हजार रुपए की मांग कर ब्लैकमेल करने के आरोप में दो यूट्यूबर के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया है। पुलिस ने गोपाल सावनेर तथा लक्ष्मीनारायण उर्फ लक्ष्मण केल्दे, दोनों निवासी पंधाना, को आरोपी बनाया है।

मामले की शिकायत मोहनपुर ग्राम पंचायत के सचिव रामप्रकाश मोरे ने की थी। शिकायत में बताया गया कि दोनों आरोपी सड़क और नाली निर्माण के मुद्दे पर सामाजिक माध्यमों पर वीडियो प्रसारित करने की धमकी दे रहे थे। इसके बदले 50 हजार रुपए की मांग की गई थी। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

चार ओवरलोड वाहनों पर कार्रवाई

माही की गूंज, बड़वानी।

जिले की पाटी पुलिस ने बुधवार को थाना प्रभारी रामदास यादव के नेतृत्व में ओवरलोड वाहनों के खिलाफ विशेष अभियान चलाया। इस दौरान क्षेत्र के प्रमुख मार्गों पर नाकाबंदी कर क्षमता से अधिक माल एवं सवारियां ले जाने वाले वाहनों की जांच की गई।

जांच के दौरान कई वाहन निर्धारित क्षमता से अधिक भार लेकर चलते पाए गए। पुलिस के अनुसार ऐसे वाहन न केवल यातायात नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं, बल्कि अन्य राहगीरों की सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा बने हुए हैं। अभियान के दौरान पुलिस ने चार वाहनों क्रमांक एमपी-10-जी-0391, एमपी-09-बीजी-7195, एमपी-46-जी-0376 तथा एमपी-13-एजे-1590 को ओवरलोड पाया। सभी वाहनों के विरुद्ध मोटरयान अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत चालानी कार्रवाई की गई। पुलिस ने आवश्यक पंचनामा तैयार कर वाहनों को सुरक्षा की दृष्टि से थाना परिसर में खड़ा कराया है। संबंधित मामलों को आगामी वैधानिक कार्रवाई के लिए न्यायालय में प्रस्तुत किया जाएगा।

कार्रवाई के दौरान वाहन मालिकों एवं चालकों को यातायात नियमों का पालन करने की सख्त हिदायत दी गई। उन्हें चेतावनी दी गई कि भविष्य में नियमों का उल्लंघन करने पर और कठोर कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस अधीक्षक पद्मविलोचन शुक्ल ने नागरिकों से सड़क सुरक्षा को प्राथमिकता देने और यातायात नियमों का पालन करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि ओवरलोड वाहन सड़क दुर्घटनाओं के प्रमुख कारणों में शामिल हैं, जिनसे जान-माल की हानि होती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जिले में ओवरलोड वाहनों के विरुद्ध जांच एवं कार्रवाई का अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा।

37.50 करोड़ के सांदीपनि उत्कृष्ट विद्यालय भवन का लोकार्पण

माही की गूंज, खंडवा।

जिले में शिक्षा और आधारभूत सुविधाओं से जुड़े दो महत्वपूर्ण परियोजनाओं का लोकार्पण किया गया। प्रभारी मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने 37.50 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित सांदीपनि उत्कृष्ट विद्यालय के नवीन भवन तथा 80 लाख रुपए की लागत से बने जनपद पंचायत पुनासा के नवीन भवन का लोकार्पण किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रभारी मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में शिक्षा और आधारभूत संरचना के विकास के लिए लगातार कार्य किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मूंदी में बने सांदीपनि उत्कृष्ट विद्यालय से क्षेत्र के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए अन्य शहरों का रुख नहीं करना पड़ेगा।

उन्होंने बताया कि सांदीपनि विद्यालयों में ई-पुस्तकालय, आधुनिक संगणक प्रयोगशाला तथा भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान की प्रयोगशालाओं सहित सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हैं। इससे आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को भी बेहतर शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।

कार्यक्रम के दौरान प्रभारी मंत्री ने धर्मस्व विभाग की ओर से संत बुखार दास बाबा मेले के आयोजन के लिए प्रतिवर्ष 10 लाख रुपए स्वीकृत करने की घोषणा की। उन्होंने विद्यार्थियों एवं उपस्थित नागरिकों को नशा मुक्ति की शपथ भी दिलाई।

सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल ने कहा कि पहले शासकीय विद्यालयों में संसाधनों और शिक्षकों की कमी रहती थी, लेकिन अब बड़े स्तर पर शिक्षकों की नियुक्तियां की गई हैं। उन्होंने कहा कि सांदीपनि विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, खेल मैदान और विद्यार्थियों के लिए बस जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से मन लगाकर अध्ययन करने तथा अपने पसंदीदा क्षेत्रों में आगे बढ़ने का आह्वान किया।

मांधाता विधायक नारायण पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा मूंदी में सांदीपनि विद्यालय की स्वीकृति क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण सौगात है। उन्होंने कहा कि इन विद्यालयों में निजी विद्यालयों से भी बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं और विद्यार्थियों को महानगरों के स्तर की शिक्षा स्थानीय स्तर पर ही मिल रही है।

लोकार्पण समारोह के दौरान प्रभारी मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने विद्यार्थियों द्वारा तैयार विज्ञान प्रदर्शनी के मॉडल देखे और उनकी सराहना की। इसके बाद विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर उपस्थित अतिथियों एवं नागरिकों का मन मोह लिया। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष राजपालसिंह तोमर सहित जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे।

नशे से दूरी है जरूरी 2.0 अभियान का शुभारंभ

माही की गूंज, बड़वानी।

मध्यप्रदेश शासन के निर्देश पर जिले को नशामुक्त बनाने तथा युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों से बचाने के उद्देश्य से श्नशे से दूरी है जरूरी 2.0 विशेष जनजागरूकता अभियान का शुभारंभ किया गया।

अभियान के तहत कलेक्टर जयति सिंह, पुलिस अधीक्षक पद्मविलोचन शुक्ल तथा जिला पंचायत मुख्य कार्यपालन अधिकारी काजल जावला ने कोतवाली थाना परिसर से जनजागरूकता रैली एवं विशेष प्रचार रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में स्कूली विद्यार्थी, शिक्षक, राष्ट्रीय कैडेट कोर एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के कैडेट, स्काउट-गाइड, विभिन्न शासकीय विभागों के अधिकारी-कर्मचारी, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि, पुलिस बल तथा स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

जनजागरूकता रैली शहर के प्रमुख मार्गों से होकर निकली। रैली में नारों और संदेशों के माध्यम से आमजन से नशे जैसी सामाजिक बुराई के विरुद्ध एकजुट होने का आह्वान किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कलेक्टर जयति सिंह ने कहा कि नशे की समस्या का समाधान केवल प्रशासनिक प्रयासों से संभव नहीं है। इसके लिए समाज की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों एवं युवाओं से नशे से दूर रहने तथा इस अभियान को जनआंदोलन का रूप देने की अपील की।

पुलिस अधीक्षक पद्मविलोचन शुक्ल ने कहा कि नशा समाज और परिवारों के विघटन का प्रमुख कारण बनता है। उन्होंने बताया कि यह अभियान जिले के सभी थाना क्षेत्रों में 15 से 30 जुलाई 2026 तक संचालित किया जाएगा। इसके अंतर्गत विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा सार्वजनिक स्थलों पर निबंध लेखन, चित्रकला, नुक्कड़ नाटक, जनसंवाद और खेलकूद जैसी रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से जागरूकता फैलाई जाएगी।

कार्यक्रम के अंत में पुलिस अधीक्षक ने उपस्थित लोगों को नशामुक्ति की सामूहिक शपथ दिलाई। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के अधिकारी, जनप्रतिनिधि तथा पुलिस एवं प्रशासनिक अमला उपस्थित रहा। अभियान 30 जुलाई 2026 तक जिलेभर में जारी रहेगा।

स्कूल जा रहे शिक्षक को ट्रक ने मारी टक्कर

माही की गूंज, सेंधवा।

मुंबई-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर बुधवार को स्कूल जा रहे एक शिक्षक सड़क दुर्घटना में घायल हो गए। जामनिया गांव के पास तेज गति से आ रहे एक ट्रक ने उनकी मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। घायल शिक्षक को प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए जिला अस्पताल भेजा गया है।

जानकारी के अनुसार प्राथमिक विद्यालय राई में पदस्थ शिक्षक संजय मंडलोई बुधवार सुबह अपने घर से विद्यालय जाने के लिए निकले थे। जामनिया गांव के समीप राष्ट्रीय राजमार्ग की सेवा सड़क पार करते समय एक ट्रक ने उनकी मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार टक्कर इतनी जोरदार थी कि संजय मंडलोई मोटरसाइकिल सहित सड़क पर दूर जा गिरे। दुर्घटना में उनके हाथ और पैरों में गंभीर चोटें आई हैं। घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों ने तत्काल सहायता पहुंचाई और एम्बुलेंस को सूचना दी।

घायल शिक्षक को एम्बुलेंस से पहले सिविल अस्पताल सेंधवा पहुंचाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए जिला अस्पताल भेज दिया गया। घटना की सूचना पुलिस को दे दी गई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

बदलाव के दौर में नई शुरूआत की जरूरत

हर सुबह मैं हमारे राष्ट्रीय अखबारों की मुख्य खबरों के शीर्षक पंक्तियां देखता, मोबाइल फोन पर खबरें स्क्रॉल करता हूं, यहां तक कि टीवी पर भी नजर डालता हूं... यह सब किसी अच्छी ख़बर की तलाश में, लेकिन कोई फायदा नहीं होता। एआई के दौर की शुरुआत के साथ दुनिया तेजी से आगे बढ़ रही है। अमेरिका, चीन, ताइवान, कोरिया इत्यादि देशों की कंपनियां, संस्थान और लोग नई और रोमांचक तकनीकें, जैसे कि क्वांटम कंप्यूटिंग, रोबोटिक्स, क्लीन एनर्जी और एआई की सोचने-समझने और चेतना विकसित करने की क्षमता करने के बारे में बात कर रहे हैं। मस्क और उनकी कंपनी मंगल ग्रह तक पहुंचने, अंतरिक्ष यात्रा और अंतरिक्ष कक्षा में डेटा सेंटर स्थापित करने की बात कर रहे हैं...

जब मैं यह लेख लिख रहा हूं, तब भी इंसानी क्षमता और कल्पना को नई उड़ान मिल रही है। लेकिन, यहां अपने देश में हम क्या देखते हैं, राष्ट्रीय विचार किस बारे में हैं? राजनीतिक और धार्मिक झगड़ों की खबरें, राजनीति में दखलअंदाजी करते विभिन्न धार्मिक संस्थाओं द्वारा जारी फतवों की खबरें। अनेक धार्मिक स्थलों पर हुई चंदा या चढ़ावे की चोरी की जांच की खबरें। यह महत्वपूर्ण पूजा-स्थलों को लेकर हैं। फिर स्थानीय धर्मगुरुओं द्वारा चलाए जा रहे हजारों 'डेरे' हैं, और यहां भी मामला भारी-भरकम दान-चढ़ावे का है। धीरे-धीरे राजनीति और धर्म के बीच की रेखा मिटती गई और आज वे गलबहियां डाले चल रहे हैं।

इस अफरातफरी में अगर कोई बंदा तर्क, कोई तथ्य, कोई दिशा तलाशना चाहे... कुछ ऐसा जो राष्ट्रीय हित को आगे बढ़ाने वाला हो। कोई स्पष्ट राजनीतिक या आर्थिक विचारों को ढूंढ़ता है- चाहे वे दक्षिणपंथी हो, मध्यमार्गी हो, वामपंथी, समाजवादी या कम्युनिस्ट होय लेकिन सब बेकार, हर चीज पर बस धर्म के अलग-अलग रंग छाए हुए हैं। अख़बार पढ़ने की सुबह की दिनचर्या के वक्त टी.एस. एलियट की मशहूर कविता 'वेस्टलैंड' की यह पंक्तियां बेसाख्ता याद आ जाती हैंकृ'यहां पानी नहीं, बस चट्टान हैय चट्टान है, पानी नदारद और रेतीली सड़क...।'

आम आदमी कहां है, जिसके नाम पर यह सब किया जाता है? वह तो 'बलि का बकरा' है, लेकिन 'बलि का बकरा' असल में क्या चाहता है? क्या वह इन अंधेरी गलियों में चलना ही चाहता है- नहीं, उसे रोजगार चाहिए, उसे अपने परिवार के लिए दो वक्त की रोटी चाहिए, उसे मौसम की मार से बचने के लिए सिर पर छत चाहिए, उसे अपने बच्चों के लिए शिक्षा स्वास्थ्य सुविधाएं चाहिए, वह चाहता है कि जान-माल की सुरक्षा की गारंटी।

नब्बे के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के खुलने पर छिपी हुई क्षमताओं को बाहर आने में मदद मिली और हमने इसे अपने आईटी सेक्टर के विकास में देखा। उस समय आईआईटी, आईआईएम और क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेजों ने शिक्षा का जो स्तर तैयार किया, उसी से यह विकास संभव हो पाया। सरकारी प्रोत्साहन के साथ व्यक्तिगत प्रयासों ने इसे आसान बनाया और समय के साथ भारत आईटी सेवा प्रदाता क्षेत्र में एक शक्तिपुंज बन गया। इस पारिस्थितिकी ने बड़ी संख्या में हुनर तैयार किया, जिससे न केवल

टीसीएस, इंफोसिस, विप्रो, एचसीएल जैसी कई आईटी कंपनियां विकसित हुईं, बल्कि भारत ने अपने हुनर को दुनियाभर में निर्यात भी किया। आज भी तकनीक की दुनिया में कई बड़े नाम भारतीय मूल के लोगों के हैं, जिन्होंने अपने व्यावयासिक जीवन की शुरुआत हमारे आईआईटी और क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेजों से की थी। सत्य नडेला, सुंदर पिचाई, शांतनु नारायण आदि इसके बेहतरीन उदाहरण हैं।

आज जब इस क्षेत्र पर खतरा मंडरा रहा है, तो इसकी जगह कौन लेगा? एआई के कारण हो रहे बदलावों से हजारों नौकरियां जा रही हैं या उन पर खतरा मंडरा रहा है। 90 के दशक में हम मुश्किल हालात से उबरकर आगे बढ़े थे, लेकिन क्या खुद को फिर से खोजने के लिए हमें दोबारा उसी मुश्किल दौर में पहुंचना होगा...? हमारे पास कोई ऐसा तरीका या 'संहिता' है जिसे हम बांच सकें, वह जिसने पिछली बार सफलता दिलाई थी। इसमें नैसकॉम, एसटीपीआई, एसईजेड जैसी संस्थाओं का गठन और उनसे जुड़ी टैक्स छूट और बुनियादी ढांचा, और निश्चित रूप से उस दौर के सभी उदारीकरण सुधार शामिल हैं।

आईटी उद्योग को बढ़ावा दिया गयाय इसे कई तरह की छूटें दी गईं और सरकार ने ज्यादातर मामलों में मददगार की भूमिका निभाई और जटिल 'लाल फीताशाही' को राह से दूर रखा। आईटी ने देश के लोगों का ध्यान खींचा और आम नागरिक ने इसे गरीबी और कम आय वाले दायरे से बाहर निकलने का एक जरिया माना। संक्षेप में कहें तो, इसने हमारे पढ़े-लिखे और कानून का पालन करने वाले नागरिकों को अवसर और सम्मान दिया, और देश को एक बड़े वैश्विक सेवा प्रदाता के रूप में आगे बढ़ाया। आज हमारी अर्थव्यवस्था 90 के दशक की तुलना में कई गुणा बड़ी है, लेकिन इस बड़े पैमाने और उन्नति के साथ एक उलटी स्थिति भी जुड़ी है- मंदी कहीं ज्यादा नुकसानदेह हो सकती है। जिन लोगों ने जीवनस्तर का एक खास पायदान हासिल कर लिया है और जिन्होंने आईटी के सपने में निवेश किया है, आज उनके पास खोने के लिए बहुत कुछ है। न केवल सीधे तौर पर नौकरी करने वाले लोग, बल्कि देश में आईटी हब के इर्द-गिर्द बनी संपूर्ण अर्थव्यवस्थाएं भी प्रभावित हो सकती हैं।

तो, इसका विकल्प क्या है? हमें फिर से अपनी एक खासियत ढूंढ़नी होगी और सरकार को एक बार फिर नियामक के बजाय मददगार की भूमिका निभानी होगी। हो सकता है कि यह खास जगह एआई-सहायक सेवाएं और डेटा सेंटर के रूप में हो, या फिर ईवी और स्वच्छ ऊर्जा की तरफ हो रहे बड़े बदलाव में हो। जैसे-जैसे हमारी ऊर्जा की जरूरतें बढ़ रही हैं और मौसम में बदलाव की सच्चाई स्पष्ट होती जा रही है, जीवाश्म ईंधन से दूर हटने का चलन जारी रहेगा। कहा जाता है कि भारतीय कॉर्पोरेट जगत के पास 200 बिलियन डॉलर से ज्यादा का रिकॉर्ड नकद भंडार है और इसमें से ज्यादातर पिछले चार सालों में जमा हुआ है... जब बहुत कुछ किए जाने की गुंजाइश है, तब वे भारत में निवेश क्यों नहीं कर रहे हैं? निश्चित रूप से फार्मा जैसे सेक्टर, जिसमें हमारा अधिकांश एपीआई (दवा बनाने का मूल घटक) अभी भी चीन से आयात किया जाता है, न केवल किसी दूसरे देश की मर्जी पर निर्भर हैं, बल्कि उन्हें बड़े निवेश के जरिए इस बुनियादी खामी को दूर करने की जरूरत है।

गुरबचन जगत

निश्चित रूप से, ऊर्जा के सभी प्रारूपों के मामले में अभी भी एक बहुत बड़ा लक्ष्य हासिल करना बाकी है। शिक्षा के मामले में, माता-पिता विदेश में शिक्षा दिलवाने पर बहुत पैसा खर्च करते हैं, हम यहां अच्छे विकल्प क्यों नहीं दे सकते? स्वास्थ्य के मामले में, हमारी करोड़ों की आबादी को कहीं ज्यादा बड़े आधारभूत ढांचे की जरूरत है। मैंने अभी कुछ प्रमुख क्षेत्रों का जिक्र किया है जो मेरे दिमाग में आए, मुझे यकीन है कि विशेषज्ञ इस बारे में और भी बहुत कुछ बता सकते हैं। अगर हमारे निजी क्षेत्र को सही माहौल मिले, तो वह वैश्विक स्तर पर मुकाबला करने और दुनिया का अग्रणी बनने में पूरी तरह काबिल हैय हमें बस उन्हें सक्षम बनाने और सहायता करने की जरूरत है।

हमें 'मैनहट्टन प्रोजेक्ट' जैसा एक प्रोजेक्ट शुरू करने की जरूरत है, जिसमें हम विज्ञान, तकनीक, अनुसंधान, वित्तीय मदद और प्रशासनिक क्षेत्रों के अपने सबसे बेहतरीन लोगों को एक साथ एक ही जगह पर ला सकें। इसके नतीजे तेजी से मिलेंगे और यह एक खेल बदलने वाला साबित होगा।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे से जुड़ेगा मालवा अंचल

माही की गूंज, बदनावर (धार)।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे से मालवा को जोड़ने वाली 3,839 करोड़ रुपये की बदनावर-पेटलावद-थांदला-टिमरवानी फोरलेन परियोजना आखिरकार धरातल पर उतरने लगी है। उज्जैन-इंदौर मेट्रोपालिटन रीजन के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण इस परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण के बाद प्रभावित किसानों को मुआवजा वितरण शुरू हो गया है।

अब तक 276 किसानों के लिए 25.58 करोड़ रुपये का मुआवजा स्वीकृत किया जा चुका है। दूसरी ओर सिंहस्थ-2028 शुरू होने में अब केवल 20 माह शेष है और 80.45 किलोमीटर लंबे इस फोरलेन का निर्माण अभी प्रारंभिक चरण में है। ऐसे में भूमि अधिग्रहण की शेष प्रक्रिया और मानसून को देखते हुए निर्धारित समय में परियोजना पूरी करना सबसे बड़ी चुनौती माना जा रहा है। यह मार्ग न केवल बदनावर को दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे से जोड़ेगा, बल्कि पीएम मित्रा मेगा टेक्सटाइल पार्क, औद्योगिक निवेश, व्यापार और धार्मिक पर्यटन को भी नई गति देगा।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने गत मार्च में इस चार-लेन कारिडोर को मंजूरी दी थी। हाईब्रिड एन्युटी माडल (एचएएम) पर बनने वाला यह लगभग 80.45 किलोमीटर लंबा फोरलेन बदनावर, पेटलावद, थांदला और टिमरवानी को दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे से सीधे जोड़ेगा। इससे धार और झाबुआ जिलों के साथ गुजरात तथा राजस्थान तक तेज और सुगम सड़क संपर्क स्थापित होगा। परियोजना की घोषणा केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने 10 अप्रैल 2025 को उज्जैन-बदनावर फोरलेन के लोकार्पण समारोह में मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव के आग्रह पर की थी।

सिंहस्थ से पहले पूरा करना आसान नहीं

प्रदेश सरकार ने सिंहस्थ महाकुंभ-2028 को देखते हुए उज्जैन से जुड़े प्रमुख मार्गों के उन्नयन का लक्ष्य तय किया है। अनुमान है कि महाकुंभ में 30 से 40 करोड़ श्रद्धालु पहुंचेंगे। ऐसे में इस फोरलेन का समय पर पूरा होना बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हालांकि वर्तमान स्थिति में केवल भूमि अधिग्रहण और मुआवजा वितरण की प्रक्रिया शुरू हुई है। वर्षाकाल के कारण निर्माण गतिविधियां भी सीमित रहेंगी। विशेषज्ञों का मानना है कि उज्जैन-बदनावर के 69 किलोमीटर फोरलेन निर्माण में लगभग तीन वर्ष लगे थे, ऐसे में 80 किलोमीटर लंबे नए कारिडोर को तय समय में पूरा करना आसान नहीं होगा।

50 से अधिक गांव होंगे प्रभावित

प्रस्तावित फोरलेन धार और झाबुआ जिले के 50 से अधिक गांवों से होकर गुजरेगा। बदनावर तहसील के खीमाखेड़ी, खेड़ा, शंभूपाड़ा, चंदवाड़िया, संदला, दोतरिया, भैंसोला, सेमलखेड़ा, छायां, लिलीखेड़ी सहित 14 गांव भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया में शामिल हैं। परियोजना के लिए कुल 155.579 हेक्टेयर भूमि अधिगृहित की जा रही है। इसमें खेड़ा, दोतरिया, शंभूपाड़ा और भैंसोला गांवों में सर्वाधिक भूमि शामिल है।

76 किसानों के खातों में पहुंचे 7.22 करोड़ रुपये

परियोजना के तहत 276 किसानों के भूमि अधिग्रहण अवार्ड पारित किए जा चुके हैं। इनके लिए कुल 25 करोड़ 58 लाख 66 हजार 504 रुपये का मुआवजा निर्धारित किया गया है। राष्ट्रीय राजमार्ग अधिनियम और भू-अर्जन, पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन अधिनियम के तहत भुगतान किया जा रहा है। अब तक ग्राम संदला, चंदवाड़िया बुजुर्ग, शंभूपाड़ा, छायन, लिलीखेड़ी, खेड़ा, शंभूपाड़ा, खीमाखेड़ी के प्रभावित आठ गांवों के 76 किसानों के बैंक खातों में सात करोड़ 22 लाख 65 हजार 794 रुपये सीधे जमा किए जा चुके हैं। शेष किसानों को दस्तावेजी प्रक्रिया पूरी होने के बाद भुगतान किया जाएगा।

तीन गांवों में प्रक्रिया शेष

बदनावर तहसील के अधिकांश प्रभावित गांवों में मुआवजा वितरण शुरू हो चुका है, लेकिन दोतरिया, भैंसोला और लिलीखेड़ी में गाइडलाइन दरों के अंतर तथा कुछ तकनीकी कारणों से प्रक्रिया अभी लंबित है। प्रशासन का कहना है कि औपचारिकताएं पूरी होते ही इन गांवों के किसानों को भी मुआवजा वितरित किया जाएगा।

पीएम मित्रा पार्क को मिलेगा बड़ा लाभ

ग्राम भैंसोला में विकसित हो रहा पीएम मित्रा मेगा टेक्सटाइल पार्क इस परियोजना का सबसे बड़ा लाभार्थी होगा। फोरलेन बनने से उद्योगों के लिए कच्चे माल और तैयार उत्पाद का परिवहन तेज होगा, निवेश को बढ़ावा मिलेगा और रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। साथ ही दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे से सीधा जुड़ाव बदनावर और पूरे मालवा क्षेत्र को औद्योगिक, व्यापारिक और पर्यटन की दृष्टि से नई पहचान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

जल्द ही किसानों के बैंक खातों में पहुंचेगी

एसडीएम प्रियंका मिमरोट ने बताया कि, फोरलेन निर्माण के लिए अधिगृहित निजी भूमि के प्रकरणों में शेष पात्र किसानों को मुआवजा राशि वितरण की कार्रवाई नियमानुसार लगातार की जा रही है। आवश्यक औपचारिकताएं पूरी होते ही संबंधित किसानों के बैंक खातों में राशि अंतरित की जाएगी।

एआई से बनाया फर्जी पास...

माही की गूंज, उज्जैन। जिले के विश्व प्रसिद्ध महाकाल मंदिर की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर एक घटना ने सुरक्षा एजेंसियों की चिंता बढ़ा दी है। दरअसल, महाकाल मंदिर में एआई तकनीक का इस्तेमाल कर बनाया गया फर्जी वीआईपी पास पकड़ा गया। इस मामले में भोपाल के एक युवक और उसके दो नाबालिग साथियों को हिरासत में लिया गया है।

फर्जी पास से कर गए एंट्री

पुलिस के मुताबिक, भोपाल के कोलार रोड का रहने वाला 19 वर्षीय भरत उइके अपने दो नाबालिग दोस्तों के साथ उज्जैन आया था। भरत ने कथित तौर पर एआई आधारित टूल का इस्तेमाल किया। उसने मंदिर के असली वीआईपी पास जैसा दिखने वाला एक फर्जी डिजिटल पास तैयार किया। इसी फर्जी पास को दिखाकर तीनों आरोपी परिसर के अंदर प्रवेश करने में भी सफल हो गए।

एक गलती से खुला राज

तीनों युवक मंदिर के अंदर तो पहुंच गए, लेकिन सुरक्षा जांच के दौरान वे पकड़े गए। सतर्क सुरक्षाकर्मियों की नजर उनके पास पर लिखे श्गर्भगृह दर्शनश् शब्द पर पड़ी। दरअसल, महाकाल मंदिर के गर्भगृह में आम श्रद्धालुओं का प्रवेश पिछले करीब ढाई वर्षों से पूरी तरह बंद है। सुरक्षाकर्मियों को यहीं से संदेह हुआ। जब उन्होंने पास में दिए गए बारकोड और अन्य तकनीकी जानकारियों का मिलान किया, तो वह पूरी तरह फर्जी पाया गया। इसके तुरंत बाद मंदिर प्रशासन ने इसकी सूचना महाकाल थाना पुलिस को दी। हिरासत में लेने के बाद जब पुलिस ने भरत उइके से पूछताछ की, तो उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया। आरोपी ने बताया कि उसने तकनीक का गलत इस्तेमाल कर वीआईपी पास का प्रारूप तैयार किया था ताकि उसे कतार में न लगना पड़े।

आरोपियों को दर्शन भी कराए गए

महाकाल थाना पुलिस ने मुख्य आरोपी भरत उइके के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की है। वहीं, उसके साथ आए दोनों नाबालिगों के मामले में किशोर न्याय अधिनियम के तहत प्रक्रिया पूरी की जा रही है। एक दिलचस्प बात यह भी रही कि पुलिसिया कार्रवाई के बाद तीनों को सामान्य श्रद्धालुओं की लाइन में लगकर बाबा महाकाल के दर्शन भी कराए गए।

बाल यौन शोषण से संरक्षण एवं महिला अधिकारों पर जागरूकता शिविर आयोजित

माही की गूंज, आलीराजपुर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा ष्बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओष् योजना के तहत महिला एवं बाल विकास विभाग के समन्वय से जनपद पंचायत भवन चन्द्रशेखर आजाद नगर में विधिक जागरूकता एवं साक्षरता शिविर आयोजित किया गया।

शिविर में सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा पॉक्सो एक्ट के प्रावधानों की जानकारी देते हुए बच्चों को यौन शोषण, तस्करी एवं अन्य अपराधों से संरक्षण के संबंध में जागरूक किया गया। वहीं जिला विधिक सहायता अधिकारी एवं असिस्टेंट लीगल एड डिफेंस काउंसिल ने बाल अधिकार, बाल विवाह निषेध, शिक्षा का अधिकार, अपराध पीड़ित प्रतिकर योजना, महिलाओं के संपत्ति अधिकार एवं साइबर सुरक्षा पर जानकारी दी गई। कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारी, पैरालीगल वॉलेंटियर्स तथा बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित रहीं।

कन्या परिसर से पैदल कलेक्टोरेट निकली छात्राएं, कलेक्टर ने कन्या परिसर पहुंचकर सुनी समस्या

माही की गूंज, आलीराजपुर।

शासकीय कन्या शिक्षा परिसर उदयगढ़ की बालिकाएं सोमवार सुबह 10रू00 बजे पैदल चलकर रोड पर नारे लगाते कलेक्टर से मिलने पहुंची थी। पैदल चलते समय उन्हें कैबिनेट मंत्री नागरसिंह चौहान, सांसद श्रीमती अनीता नागरसिंह एवं एसडीएम वीरेंद्र बघेल,नायाब तहसीलदार गजराजसिंह सोलंकी, बीईओ, बीआरसी रामसिंह सोलंकी, हॉस्टल वार्डन, जनपद सीईओ और सहायक आयुक्त संजय परवाल के द्वारा भी समझाया गया लेकिन बालिकाएं नहीं मानी वह पैदल पैदल चलती गई। उदयगढ़ से 5 से 7 किलोमीटर दूर ग्राम थांदला तक पहुंच गई फिर बाद में बच्चों को ग्राम थांदला में पेड़ के नीचे बिठाया गया और वहां जोबट विधायक श्रीमती सेना महेश पटेल ने आकर बच्चों को समझाएं और तभी कलेक्टर श्रीमती नीतू माथुर भी वहां पर पहुंची और बच्चों को लेकर कन्या शिक्षा परिसर छात्रावास उदयगढ़ में गई वहां पर उन बालिकाएं से विस्तार रूप से चर्चा की।

कन्या शिक्षा परिसर पहुंची कलेक्टर

कलेक्टर श्रीमती नीतू माथुर ने मामले को गंभीरता से लेते हुए स्वयं उदयगढ़ पहुंचकर छात्राओं से मुलाकात की। कलेक्टर श्रीमती माथुर ने छात्राओं से सड़क पर ही संवाद कर उनकी समस्याओं और भावनाओं को समझा। इसके बाद छात्राओं को वाहनों के माध्यम से सुरक्षित रूप से शासकीय कन्या शिक्षा परिसर उदयगढ़ वापस पहुंचाया गया। कन्या शिक्षा परिसर पहुंचकर कलेक्टर श्रीमती माथुर ने छात्राओं से विस्तारपूर्वक चर्चा की और उनकी समस्याएं सुनीं। छात्राओं ने परिसर में गुणवत्तापूर्ण भोजन नहीं मिलने सहित अन्य मूलभूत सुविधाओं की समस्या बताई। इस पर कलेक्टर ने भोजन की गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित करने तथा संबंधित व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने छात्राओं को उनकी समस्याओं के उचित निराकरण का भरोसा भी दिलाया। साथ ही छात्राओं ने एक और समस्या में बताया कि कुछ छात्राएं रात में हॉस्टल की खिड़की की जालियों को तोड़ कर बाहर निकली थी। जिस पर कलेक्टर ने उन छात्राओं पर नाराजगी जताई और उनके पालकों को मिलने के लिए छात्रावास बुलाया तथा संबंधित छात्राओं के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई करने के निर्देश संबंधित को दिए। कलेक्टर माथुर ने छात्राओं को समझाइश देते हुए कहा कि भविष्य में किसी भी समस्या या शिकायत को शिक्षक, वार्डन अथवा संबंधित अधिकारियों के माध्यम से प्रशासन तक पहुंचाएं। बिना किसी शिक्षक, वार्डन अथवा अभिभावक को सूचना दिए इस प्रकार परिसर से बाहर निकलना उचित नहीं है। उन्होंने छात्राओं को अनुशासन बनाए रखने की समझाइश भी दी। साथ ही कलेक्टर ने मंडल संयोजक को नियमित निरीक्षण करने के निर्देश दिए।

जिला विकास समन्वय और निगरानी समिति (दिशा) की बैठक का हुआ आयोजन

माही की गूंज, आलीराजपुर।

झाबुआ-रतलाम लोकसभा क्षेत्र की सांसद श्रीमती अनीता चौहान की अध्यक्षता में कलेक्टर कार्यालय के सभाकक्ष में जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक आयोजित की गई। बैठक में अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री नागर सिंह चौहान, कलेक्टर श्रीमती नीतू माथुर, जिला पंचायत सीईओ श्रीमती संघमित्रा गौतम, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती हजरी बाई खरत, जिला अध्यक्ष मकू परवाल सहित समस्त जनपद पंचायत सदस्य, जनप्रतिनिधि एवं विभिन्न विभागों के जिलाधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक में सांसद श्रीमती चौहान ने पूर्व बैठक के पालन प्रतिवेदन की समीक्षा करते हुए पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग अंतर्गत मनरेगा एवं प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), कृषि विभाग की प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना एवं भावांतर योजना, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग अंतर्गत जिले में हैंडपंपों की स्थिति, खराब एवं सुधारे गए हैंडपंपों तथा जल जीवन मिशन के कार्यों की समीक्षा की। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान, विद्युत विभाग, जल संसाधन विभाग तथा महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाओं और प्रगतिरत कार्यों सहित विभिन्न विभागों में कार्यों की भी विस्तार से समीक्षा की गई।

सांसद श्रीमती चौहान ने सभी अधिकारियों को अपनी विभागीय कार्ययोजना बनाकर कार्य करने तथा जनप्रतिनिधियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए जिले के विकास को गति देने के निर्देश दिए। कृषि विभाग की समीक्षा के दौरान उन्होंने उप संचालक कृषि को खाद वितरण की ई-टोकन व्यवस्था के संबंध में गांव-गांव में किसानों को जागरूक करने और उनसे निरंतर संवाद स्थापित करने के निर्देश दिए, ताकि किसानों को नियमानुसार एवं समय पर खाद उपलब्ध हो और वितरण व्यवस्था में किसी प्रकार की परेशानी न आए। उन्होंने खाद वितरण केंद्रों के समीप कियोस्क सेंटर की व्यवस्था करने के निर्देश भी दिए, जिससे किसानों को ई-टोकन जनरेट करने में सुविधा हो।

विद्युत विभाग की समीक्षा करते हुए सांसद श्रीमती चौहान ने नवीन ग्रिड निर्माण कार्यों की नियमित निगरानी कर उन्हें शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान अंतर्गत ऐसे क्षेत्रों में प्राथमिकता से विद्युतीकरण कार्य करने को कहा, जहां अभी बिजली की सुविधा उपलब्ध नहीं है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के महाप्रबंधक को निर्माण कार्यों में गति लाने के निर्देश दिए गए।

महिला एवं बाल विकास विभाग की समीक्षा के दौरान सांसद श्रीमती चौहान ने जिले के जीर्ण-शीर्ण आंगनवाड़ी भवनों का चिन्हांकन कर सूची तैयार करने तथा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं से संबंधित दावा-आपत्ति प्रकरणों का शीघ्र निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान अंतर्गत जनजातीय कार्य विभाग के निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए उन्होंने निर्माण एजेंसियों को सभी कार्य गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण करने तथा स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ समन्वय स्थापित करने को कहा। पीआईयू विभाग के निर्माण कार्यों को भी गति देते हुए निर्धारित समय-सीमा में गुणवत्ता के साथ पूर्ण करने के निर्देश दिए गए।

बैठक के दौरान अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री नागर सिंह चौहान ने अधिकारियों को जिले के सभी छात्रावासों का नियमित निरीक्षण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि छात्रावासों के सूचना पटल पर कलेक्टर, जिला पंचायत सीईओ, एसडीएम, सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग एवं बीईओ के मोबाइल नंबर अनिवार्य रूप से चस्पा किए जाएं, ताकि छात्र-छात्राएं किसी भी समस्या की स्थिति में संबंधित अधिकारियों को सीधे अवगत करा सकें और उनकी समस्याओं का समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित हो।

आदिवासी बहुल जिले का रेल संपर्क सीधे गुजरात से जुड़ने की दहलीज पर

माही की गूंज, धार।

जिले में अब तक इंदौरदृदाहोद रेल परियोजना की प्रगति ही दिखाई दे रही थी, लेकिन पहली बार धारदृछोटा उदयपुर रेल परियोजना भी जिले में वास्तविकता का रूप लेती नजर आ रही है। टांडा रोड तक रेलवे ट्रैक, स्टेशन और विद्युतीकरण का कार्य पूरा हो चुका है।

रेलवे ने 18 जुलाई या उसके बाद 25 केवी ओवरहेड विद्युत लाइन को चालू करने की सार्वजनिक सूचना जारी कर दी है। इसके बाद सुरक्षा परीक्षण और ट्रायल रन होंगे। यदि सब कुछ योजना के अनुसार रहा तो अगस्त में टांडा रोड और छोटा उदयपुर के बीच यात्री ट्रेन संचालन के लिए ट्रायल हो सकता है। इससे धार जिले के आदिवासी अंचल का पहली बार सीधे गुजरात से रेल संपर्क स्थापित होगा।

धार जिले के लिए यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा रहा है। अब तक जिले में रेल परियोजनाओं की चर्चा मुख्य रूप से इंदौरदृदाहोद नई रेल लाइन तक सीमित थी, लेकिन अब धारदृछोटा उदयपुर रेल परियोजना भी धरातल पर तेजी से आगे बढ़ गई है। पश्चिम रेलवे ने सार्वजनिक सूचना जारी कर बताया है कि छोटा उदयपुरदृधार नई रेल लाइन के डेकाकुंड (किमी 187ध्388) से टांडा रोड (किमी 203ध्236) खंड में 18 जुलाई या उसके बाद 25 केवी एसी ओवरहेड विद्युत लाइन को चालू कर दिया जाएगा। इसके बाद इस पूरी लाइन को हर समय विद्युत प्रवाहित (लाइव) माना जाएगा।

रेलवे सूत्रों के अनुसार टांडा रोड स्टेशन पूरी तरह तैयार है और ट्रैक सहित आवश्यक आधारभूत कार्य पूरे हो चुके हैं। अब विद्युतीकरण के बाद सुरक्षा परीक्षण और ट्रायल रन की प्रक्रिया शुरू होगी। संभावना है कि जुलाई के अंतिम सप्ताह अथवा अगस्त में यह परीक्षण पूरा कर लिया जाएगा। इसके बाद रेलवे सुरक्षा आयुक्त की आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने पर यात्री ट्रेन संचालन का मार्ग प्रशस्त होगा।

गुजरात जाना होगा आसान

इस परियोजना का सबसे बड़ा लाभ धार जिले के टांडा क्षेत्र सहित पूरे आदिवासी अंचल को मिलेगा। अभी रोजगार, व्यापार और अन्य आवश्यकताओं के लिए बड़ी संख्या में लोग गुजरात जाते हैं। रेल सेवा शुरू होने पर यात्रा अधिक आसान, सुरक्षित और कम खर्चीली हो जाएगी। साथ ही क्षेत्र में व्यापार, कृषि उपज के परिवहन और आर्थिक गतिविधियों को भी नई गति मिलने की उम्मीद है।टांडा रोड से आगे धार की दिशा में रेल लाइन का निर्माण कार्य अगले चरण में होना है। इसके लिए निविदा प्रक्रिया शेष है। हालांकि टांडा तक रेलवे की मौजूदगी इस परियोजना के लिए बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है।

धारदृछोटा उदयपुर नई रेल लाइन परियोजना वर्ष 2007-08 में स्वीकृत हुई थी। इसकी कुल लंबाई लगभग 157 किलोमीटर है तथा परियोजना की स्वीकृत लागत लगभग 1,794 करोड़ रुपये है। परियोजना का उद्देश्य मध्य प्रदेश और गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों को सीधी रेल कनेक्टिविटी प्रदान करना है। रेलवे के अनुसार जोबट, डेकाकुंड और अब टांडा रोड तक कार्य पूरा होने के बाद परियोजना का महत्वपूर्ण हिस्सा संचालन के लिए तैयार हो रहा है।

सावधानी भी जरूरी

रेलवे ने लोगों से अपील की है कि 18 जुलाई के बाद ओवरहेड विद्युत तारों को हर समय करंटयुक्त मानें। ऊंचे मालवाहक वाहन, मशीनरी और अन्य भारी उपकरण लेकर रेलवे फाटकों से गुजरते समय निर्धारित ऊंचाई का विशेष ध्यान रखें। किसी भी स्थिति में ओवरहेड विद्युत तारों के संपर्क में आने का प्रयास न करें, क्योंकि इससे जान-माल का गंभीर खतरा हो सकता है।

16 किलो मीटर के कार्य से हम जुड़ गए गुजरात से

धारदृछोटाउदयपुर रेल परियोजना अब धार जिले की सीमा तक पहुंच चुकी है।परियोजना के तहत छोटाउदयपुर से जोबट तक लगभग 85 किलोमीटर रेलखंड पर कार्य पहले ही पूरा हो चुका है और इस मार्ग पर रेल संचालन भी शुरू हो गया है।इसके बाद जोबट से डेकाकुंड तक करीब 13 किलोमीटर का निर्माण कार्य भी पूर्ण हो चुका है। वहीं डेकाकुंड से टांडा रोड (धार जिला) तक लगभग 16 किलोमीटर नए रेलखंड का निर्माण, स्टेशन, ट्रैक बिछाने और विद्युतीकरण सहित सभी प्रमुख कार्य पूरे कर लिए गए हैं।

टांडा रोड स्टेशन पर पहुंच रही विशेष रेल नवीनीकरण ट्रेन

इंदौर-दाहोद नई रेल परियोजना में अब काम तेज गति से आगे बढ़ रहा है। धार जिले के टांडा रोड रेलवे स्टेशन पर इन दिनों प्रतिदिन एक विशेष रेलवे तकनीकी ट्रेन पहुंच रही है, जो रेल पथ पर बिछी पुरानी रेलों (स्टील की पटरियों) को हटाकर उनकी जगह नई रेलें बिछाने का कार्य कर रही है। रेलवे की तकनीकी भाषा में स्टील की पटरियों को श्रेलश्श् कहा जाता है। टांडा रोड स्टेशन पर प्रतिदिन इस विशेष ट्रेन के पहुंचने से क्षेत्र में काफी हलचल बनी हुई है। बड़ी संख्या में स्थानीय लोग और रेल प्रेमी इस अत्याधुनिक तकनीकी ट्रेन को देखने स्टेशन पहुंच रहे हैं। मशीनों की मदद से रेल बदलने की प्रक्रिया लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है।

लंबे समय बाद प्रशासनिक दखल, मगर स्थिति अब भी असमंजस वाली

मामला: नगरपालिका के धर्मशाला कॉम्प्लेक्स के 13 दुकानदारों का

नगरपालिका परिषद का मौखिक आश्वासन अब भी माना जा रहा झुंझुना

माही की गूंज, झाबुआ।
मुजम्मिल मंसुरी

पिछले एक माह से शहर में धर्मशाला काम्प्लेक्स की 13 दुकानों के मामले में चल रही उठा पटक ने अब गंभीर मोड़ ले लिया है। सोमवार को नगरपालिका के विरोध में और 13 दुकानदारों के पक्ष में जिला व्यापारी संघ ने शहर बंद का आव्हान किया था। व्यापारी संघ के इस बंद को शहर में जबरदस्त समर्थन मिला और बंद पूर्णतः सफल रहा। जिसके बाद प्रशासन ने इस पूरे मामले में मुदाखिलत कर दी है। कलेक्टर खुद इस मुद्दे को लेकर गंभीरता दिखा रहे है। मंगलवार को कलेक्ट्रोरेट में इस मुद्दे पर कलेक्टर से मिलने वालों को तांता लगा रहा। नगरपालिका परिषद के सत्ताधारी दल के पार्षद, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष सहित कलेक्टर से मिलने पहुंचे तो व्यापारी संघ में भी अपनी बात रखने के लिए कलेक्टर से मुलाकात करने पहुंचा। जिसके बाद नगरपालिका परिषद में विपक्ष में बैठा पार्षदों का एक दल भी कलेक्टर से मिलने पहुंचा और अपनी बात रखी। इस तरह से एक ही मुद्दे पर कलेक्टर के साथ तीन अलग-अलग मिटिंग कलेक्ट्रोरेट में देखने को मिली। हो तो यह भी सकता था कि, कलेक्टर सभी को एक ही मिटिंग में शामिल कर सबकी बात सुन सकते थे। बहरहाल एक ही विषय पर बहस को लेकर तीन मिटिंग नगरवासियों को देखने को मिली।

इस सारे माजरे का कारण पार्षदों के मोबाइलों पर मिलने वाली सूचना भी बनी। पहले सभी पार्षदों को मोबाईल पर मेसेज प्राप्त हुए कि, कलेक्टर से 13 दुकानों के मुद्दे पर बैठक रखी गई है। बाद में विपक्षी पार्षदों के मोबाईलों पर सूचना मिलती है कि, कलेक्टर के साथ रखी गई मिटिंग निरस्त हो चुकी है। मगर बाद में खबर छन कर आती है कि परिषद के सत्ताधारी पार्षद कलेक्टर के साथ मिटिंग कर रहे है। जिसके बाद नगरपालिका परिषद में बैठे विपक्ष के पार्षदों ने योजना बनाई कि वे भी इसी मुद्दे पर कलेक्टर से अलग से मुलाकात करेंगे। राजनीतिक गुटबाजी के बीच व्यापारी संघ भी मंगलवार को कलेक्टर से मिलने के लिए पहुंच गया। हालांकि कलेक्टर योगेश तुकाराम भरसट ने तीनों ही गुटों से मुलाकात कर उनकी बात सुनी। सोमवार को नगर बंद और मंगलवार को हुए घटनाक्रम ने इस मुद्दे को और भी गंभीर रूप दे दिया है। क्योंकि सारी उठा पटक के बीच सिर्फ और सिर्फ 13 दुकानदारों को स्थापित करने के लिए ही बहस होती रही। मगर जिस समस्या के लिए पिछले एक माह से जो घटनाक्रम हो रहा है वह अब भी अधर में ही देखा जा रहा है। पीपीपी मोड का विरोध और इन्ही दुकानदारों को दुकान देती बात अपनी ही जगह अब भी बनी हुई है। व्यापारी संघ की मांग है कि, नगरपालिका लिखित आश्वासन दे दे कि कॉम्प्लेक्स निर्माण के बाद दुकानें इन्ही व्यापारियों को दी जाएगी। लेकिन नगरपालिका परिषद में बहुतम सत्ताधारी दल का है जो व्यापारियों को लिखित में देने को तैयार नहीं है। वहीं विपक्षी दल के पार्षद पीपीपी मोड पर हो रहे निर्माण को ही सिरे खारिज करने की मांग कर रहे है। उनका कहना है कि, नगरपालिका खुद अपने व्यय से निर्माण करे तो इन्ही व्यापारियों को दुकानें वापस दे। इसी बीच नगरपालिका इन 13 दुकानदारों के निर्माण अवधी के दौरान हाकर जोन में जगह देने की बात कर रही है लेकिन नियमानुसार तो हॉकर जोन ठेला व्यावसायियों के लिए होता है और नगरपालिका यहां इन 13 दुकानदारों को दुकान के बराबर जगह देने की बात कह रही है। अब सवाल यह कि, दुकानदरों को हॉकर जोन में जगह मिल भी गई तो बिना छत के वे अपना व्यावयास किस तरह से करेंगे। इसे लेकर नगरपालिका ने कोई विस्तृत जानकारी अब तक पटल पर नहीं रखी है। अब सवाल यह भी है कि क्या नगरपालिका, व्यापारियों को हॉकर जोन में गुमटियां लगाकर देगी या अस्थाई दुकान बनाकर देगी?

यह सारा घटनाक्रम तो वह है जो नगर की जनता को दिखाई दे रहा है, लेकिन इसके पीछे एक अंदरूनी राजनीतिक जंग भी चल रही है। इसका सबसे बड़ा कारण यह माना जा रहा है कि, 13 व्यापारियों के पक्ष में खड़ा हुआ व्यापारी संघ कोई छोटा-मोटा संगठन नहीं है। व्यापारी संघ अगर चाहे तो नगरीय राजनीति में उलट फैर करने का दम रखता है। इसीलिए नगरपालिका परिषद में बैठा सत्ताधारी दल व्यापारियों व उनके संघ से बेर मोल लेना नहीं चाहता। क्योंकि अगले ही वर्ष में नगरीय निकायों के चुनाव आने है। यही कारण है कि वह किसी तरह व्यापारियों को झुंझुना पकड़ा कर अपना काम निकाल ले। लेकिन नगरपालिका परिषद में बैठा विपक्ष इस मुद्दे को भुनाना चाहता है। इसीलिए विपक्ष डटकर दुकानदारों और व्यापारी संघ के साथ खड़ा है।

धर्मशाला कॉम्प्लेक्स का अगर पुनर्निमाण होता है तो नगरपालिका को बड़े राजस्व की प्राप्ती होगी ऐसा कहना नगरपालिका में बैठे जनप्रतिनिधियो का है। मगर दुकानदारों और व्यापारी संघ के लोगों का कहना है कि, नगरपालिका राजस्व प्राप्ती के लिए सिर्फ व्यापारियों को ही क्यों टारगेट कर रही है। शहर में राजस्व बढ़ाने के कई उपाय है। मगर नगरपालिका को सिर्फ वही जगह दिख रही है जहां से अधिक और बड़ा राजस्व प्राप्त हो सके। क्योंकि पिछले लगभग चार सालों में नगरपालिका के शहर के विकास के लिए किया ही क्या है? दबी जुबान में बताने वाले बताते है कि, यह इस परिषद का आखिरी वर्ष है, तो सत्ता में बैठी परिषद इस आखिरी साल में ज्यादा से ज्यादा काम करने की फिराक में है या फिर यूं कहले कि आखिरी समय में भागते भूत की लंगोटी ही सही वाली स्थिति है।

वैसे नगरपालिका में परिषद बनने के बाद से ही सबकुछ ठीक तो नहीं चल रहा है। पिछले सालों में कई बार इस तरह की घटनाएं सामने आई है, जब परिषद में बैठे पार्षदों, अध्यक्ष और उपाध्यक्ष की तनातनी की खबरें शहरवासियों ने देखी है। उस पर सोने पर सुहागा यह कि सोमवार को व्यापारी संघ के बंद के दौरान नगरपालिका उपाध्यक्ष का एक बयान कई सवालों को खड़ा कर गया है।

प्रेस से बात करते हुए नगरपालिका उपाध्यक्ष ने कहा कि, पहले नगरपालिका, प्रतिनिधी चला रहे थे, अब नगरपालिका हम (जनप्रतिनिधि) चलाएंगे। नगरपालिका परिषद के उपाध्यक्ष का यह वक्तव्य कई सवालों को जन्म देता दिखाई दे रहा है। सवाल यह कि, पिछले 4 सालों से नगरपालिका उपाध्यक्ष क्या कर रहे थे। जबकि उन्हे मालूम था कि, नगरपालिका का संचालन प्रतिनिधि कर रहा है तो फिर उन्होने समय रहते विरोध क्यों नहीं किया? अब जबकि समय का पहियां लगातार घुमता हुआ परिषद कार्यकाल के आखिरी साल तक पहुंच गया तब उपाध्यक्ष के मुंह से यह बात निकलना कि, अब तक प्रतिनिधि नगरपालिका चला रहे थे, अब हम नगरपालिका चलाएंगें यह वाक्य कहीं न कहीं हसीं का पात्र बनाता है। सवाल यह भी कि, नगरपालिका की वर्तमान स्थिति को देखते हुए क्या ही कहा जाए कि उपाध्यक्ष महोदय अगले महज एक साल में नगरपालिका में ऐसा क्या ही कर लेंगे जो पिछले सालों में नहीं कर पाए। कुल मिलाकर नगरपालिका की फूट-फुटव्वल एक बार फिर नगरवासियों के सामने आकर खड़ी हो गई है।

अब देखना यह है कि, प्रशासनिक दखल के बाद 13 दुकानदारों के भविष्य का उंट किस करवट बैठता है। क्योंकि स्थितियां तो बिलकुल भी व्यापारियों के पक्ष वाली दिखाई नहीं दे रही है। नगरपालिका लिखित में कोई आश्वासन देने से अब भी कतरा रही है। तो विपक्ष में बैठे पार्षद भी पीपीपी मोड पर निर्माण के खिलाफ है। नगरपालिका को बड़ा राजस्व भी चाहिए, पीपीपी मोड पर निर्माण करवाना है, और व्यापारियों को दुकानें देने का मौखिक झुंझुना भी पकड़ाया जा रहा है। अब प्रशासनिक पहलू पर कलेक्टर ने इस पूरे मामले को अपनी निगरानी में ले लिया है। बैठकों का दौर जारी है। मगर 13 दुकानदारों के भविष्य की स्थिति अब भी असमंजस वाली ही दिखाई दे रही है। व्यापारी संघ अपना पूरा दम-खम इस मुद्दे पर लगाता दिखाई दे रहा है। स्थिति यह बता रही है कि, व्यापारियों में नगरपालिका के खिलाफ भारी आक्रोश है और यह आक्रोश कहीं आने वाले नगरपालिका चुनावों में सत्ताधारी दल को ना झेलना पड़ जाए। अगर ऐसा होता है तो नगरपालिका अध्यक्ष से लेकर तमाम जनप्रतिनिधियों की कुर्सी पर खतरा मंडराता दिखाई दे रहा है।

ढाई वर्ष में आंगनबाड़ी का एक कक्ष का कार्य भी पूर्ण नहीं कर पाई ग्राम पंचायत

गजब का दृश्य: अधूरे कक्ष में बच्चों की बैठने की जगह वहां बकरियां बैठी है

माही की गूंज, खवासा।

डामर फलिया मे बनी नवीन आंगनवाड़ी भवन ढ़ाई साल बाद भी अधूरा।

भाजपा की मोहन सरकार में प्रशासनिक अधिकारी व स्थानिय ईकाई इतने निठल्ले हैं और सरकार इस ओर कोई ध्यान ही नहीं दे पा रही है। जिसका एक छोटा सा दृश्य थांदला जनपद की ग्राम पंचायत पाटडी के डामर फलिया में बनाई जा रही आंगनवाड़ी कक्ष में देखा जा सकता है।

ग्राम पंचायत पाटडी के डामर फलिये में 0 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए पढ़ाई एवं खेलकूद सुविधा के लिए आंगनवाड़ी के नवीन भवन हेतु पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा 11 अप्रैल 2022 को जारी दर अनुसूची एवं जिला स्तरीय टास्क दर नर्धारण समिति द्वारा अनुमोदित कर प्राकलन तैयार किया गया। जिसके बाद 1 जनवरी 2024 को आंगनवाड़ी भवन की स्वीकृति होकर प्राकलन क्रमांक 756 के आंगनवाड़ी भवन लागत 9 लाख 72 हजार का निर्माण उसी वर्ष 2024 में किया जाना था। लेकिन अनियमिताओं से घिरा भ्रष्ट तंत्र अपनी मनमानी का प्रदर्शन का ढाई वर्ष बीत जाने के बाद भी आंगनबाड़ी भवन का एक कक्ष का निर्माण कार्य भी पूर्ण नहीं कर पाई।

आंगनवाड़ी के अधुरे भवन में जहा बच्चों को होना चाहिए था वहा बकरिया बेठी है। सरकार व तंत्र की हकीकत फोटो की जुबानी। फोटो- सुनिल सोलंकी

सबसे बड़ी बात भ्रष्ट तंत्र एवं लापरवाही की मिसाल यह रही कि, 1 जनवरी 2024 से लेकर अब तक आंगनवाड़ी भवन का एक कक्ष के निर्माण छत स्तर तक बिना प्लास्टर के बना के छोड़ दिया। और जब इस संबंध में सागवा क्लस्टर के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत पाटडी के सब इंजीनियर नवलसिंग बडोले से चर्चा की तो उन्होंने कहा कि, मैं तो मौके पर अब तक गया ही नहीं हु और मुझे पता ही नहीं कि वहां किस स्तर का कार्य हुआ है... !

इंजीनियर साहब की उक्त बात ही पूरे सिस्टम की अनियमिताओं को उजागर कर रही है। जीस सब इंजीनियर के नियंत्रण में उक्त निर्माण कार्य का ले-आउट देने के साथ निर्माण कार्य पूर्ण हो जाना था। लेकिन ढाई साल के बाद भी छत स्तर का निर्माण कार्य होकर यह आंगनबाड़ी कक्ष अधूरा है। तथा इंजीनियर साहब स्वयं पुष्टि कर रहे हैं कि, वह कभी वहां गए ही नहीं और निर्माण कार्य कैसा और किस स्तर का हुआ है यह भी नहीं देखा...? इसके बाद तो शायद हमारे पास ऐसे कोई शब्द ही नहीं बचे हैं कि हम इस सिस्टम की अनियमिताओं के संबंध में और भी कुछ लिख सके।

माही की गूंज को मिली जानकारी के बाद जब आंगनवाड़ी की वस्तु स्थिति मौके पर जाकर हमारे प्रतिनिधि ने देखी तो सामने आया कि, जहां कक्ष बनने के बाद 0 से 6 वर्ष तक के बच्चों को बैठकर भविष्य की नीव गढ़नी थी, उन बच्चों के स्थान पर भवन के अंदर पालतू बकरियां बैठी थी... !

वही सामने आया कि, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता निजी मकान के बरामदे में ही बच्चों को बिठाकर आंगनबाड़ी संचालित कर रही है। जिससे आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ बच्चों को भी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है और बारिश में बच्चों को बिठाने की समस्या और बढ़ जाती है। ऐसे में ढाई वर्ष बीत जाने के बाद भी आंगनवाड़ी भवन का अधूरा निर्माण और निर्माण स्थल पर इंजीनियर का नहीं पहुंचना ही भ्रष्ट तंत्र व अनियमिताओं का बोलबाला भाजपा की मोहन सरकार में किस तरह से है यह उजागर कर रहा है जिसे हमें शब्दों में बताने की आवश्यकता नहीं है।

सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को कोई मारना नहीं चाहता है...

माही की गूंज, झाबुआ/खवासा।

लालच बुरी बला है कहावत को रेखांकित करने वाली एक कहावत है जो बच्चों की नैतिक शिक्षा के लिए पढ़ाई जाती है। जिसमें एक मुर्गी होती है जो रोज सोने का एक अंडा देती है लेकिन लालची मालिक बहुत सारे अंडे एक साथ प्राप्त करने के लिए मुर्गी को ही मार देता है। भावार्थ यह है कि, एक साथ अधिक प्राप्त करने के चक्कर में वो रोज मिलने वाले थोड़े-थोड़े से भी हाथ धो बैठता है।

इस कहानी से शिक्षा लेकर भ्रष्ट तंत्र किसी भी समस्या का स्थाई समाधान नहीं करना चाहता है। बल्कि समस्या को बनाए रखते हुए उससे नियमित रूप से भ्रष्टाचार की गुंजाइश बनाएं रखता है। मामला थांदला विधानसभा की बड़ी और महत्वपूर्ण पंचायत ग्राम पंचायत खवासा का है। जहां करीब चार दशक से नल जल योजना चल रही है बावजूद इसके यहां बारहमासी जल संकट बना रहता है। जबकि इस दौरान इस योजना पर शासन ने करोड़ों रुपए खर्च कर दिए। इतना खर्च होने के बाद भी समस्या हल होने के बजाय बढ़ती ही जा रही है। इस वर्ष मार्च महीने में चार बार, अप्रैल में तीन बार, मई है में दो बार और जून में औसत हर मोहल्ले में केवल एक बार ही जल वितरण हो पाया है। जबकि पिछले कुछ वर्षों में खवासा पेयजल संकट के लिए ढोलखरा तालाब से पानी लाने की 50 लाख की नल जल योजना बनाई गई थी। आश्चर्य की बात यह है कि, ढोलखरा-खवासा से लगभग दुगनी दूरी पर निजी पाइपलाईन द्वारा पानी पहुंच रहा है। लेकिन सरकारी पाइपलाईन से आधी दूरी पर भी पानी नहीं पहुंच पाया और निचली सतह पर कुआं बनाने की बजाय ऊपरी तल पर कुआं खोद दिया गया जो भी अधुरा जिसमें पानी नहीं मिल पाया और यह योजना भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई।

तथा जांच के नाम पर कागजी घोड़े दौडाए गए और मामले को रफा-दफा कर दिया गया। जिसके बाद खवासा के समीप से गुजरने वाली नर्मदा की पाइपलाइन से एक आउटलेट खवासा के तालाब में छोड़े जाने की मांग को लेकर खवासा की मातृशक्ति ने महिला जनपद उपाध्यक्ष श्रीमती माया देवी प्रेमसिंह चौधरी के नेतृत्व में प्रभावी आंदोलन किया। खाली बर्तनों के साथ रैली निकाली गई, धरना दिया गया तथा ज्ञापन दिया गया था। लेकिन भ्रष्ट तंत्र के कानों पर चु तक नहीं रेंगी और शासन को गुमराह करते हुए कार्य लगभग पूर्ण बता दिया गया। और आउटलेट न दिए जाने के कुछ तकनीकी कारणों को गिनाकर खवासा वासियों की इस वाजिब मांग को भी नजर अंदाज कर दिया गया। जबकि दावा किया जाता है कि, डबल इंजन की सरकार है इस के बाद भ्रष्टाचार का नया खेल खेलने के लिए जल जीवन मिशन योजना के तहत पानी की टंकी, कूप, और नई पाइपलाईन स्वीकृत की गई।

ढ़ोलखरा में नया कुप का खनन किया गया जिसमें जमिन लेवल तक पानी भरा हुआ है पर ठेकेदार व विभाग की ला परवाही के अब तक बिजली अभाव के चलते नही मिला पानी।

रिपेरिंग व सिलकोट सीसी सड़क निर्माण का भूमिपुजन।

भारत कृषि प्रधान देश हे और यहां का अनपढ़ किसान भी मानसून को लेकर अपनी पूर्व तैयारी के साथ कृषि कार्य करता है। लेकिन तकनीकी रूप से दक्ष और भ्रष्ट तंत्र में इस कार्य में भी अपनी प्राथमिकताएं तय नहीं की और विसंगति पूर्ण कार्य करके न केवल सरकारी धन का दुरुपयोग किया, बल्कि आम जनता को भी इस भीषण गर्मी में जल संकट का सामना करने को मजबूर किया। होना तो यह चाहिए था कि, सबसे पहले कुआं खोदकर बिजली कनेक्शन के बाद पाइपलाईन का कार्य पूर्ण करना था जिससे भीषण गर्मी में जल संकट का सामना न करना पड़ता। लेकिन भ्रष्टाचारियों ने सबसे पहले गांव की बनी बनाई सीमेंट की सड़क को दोनों साइडों से खोदकर पहले पाइपलाईन डाली गई। जिससे जनवरी माह से ही लोगों को पानी मिलना कम हो गया और भीषण गर्मी में जल संकट के साथ ही धूल भरी आंधियों का भी सामना करना पड़ा। जीसके बाद पिछली गलतियों से सबक लेते हुए नया कुआ पाल की निचली सतह पर खुदवाया गया और ढोलखरा से खवासा तक नई लाइन डाली गई। अब खवासावासियों को उम्मीद थी कि, पानी मिलने लगेगा लेकिन भ्रष्ट तंत्र एक बार फिर ऑफिस- ऑफिस खेलने लग गया और बिजली के ट्रांसफार्मर के लिए कागजी घोड़े दौड़ाए जाने लगे। जबकि यह काम सबसे पहले होना चाहिए था। समाचार लिखे जाने तक भी ट्रांसफार्मर नहीं लगाया जा सका था और मानसून की बेरूखी और भ्रष्ट तंत्र के चलते जुलाई माह आधा बीत जाने के बावजूद भी खवासा वासियों को पानी नहीं मिल पाया है। जिसको लेकर जनपद उपाध्यक्ष श्रीमती माया देवी चौधरी के एक बार बड़ी संख्या में महिलाओं के साथ नायब तहसीलदार को ज्ञापन सोपा गया है। ज्ञापन में कहा गया है कि, अभी तक पानी नहीं आया है और भ्रष्ट तंत्र ने भ्रष्टाचार का नया खेल प्रारंभ कर दिया है। यानी खोदी गई सड़क पर पुनः सीमेंटीकरण कार्य प्रारंभ कर दिया है। ऐसे में सहज ही कल्पना की जा कर एक और जहां लोगों को पीने का पानी नहीं मिल पा रहा है वहां सीमेंट के रोड पर तराई कैसे होगी की बात ज्ञापन में कही गई।

भ्रष्ट तंत्र तो यही चाहता है कि, रोड जल्दी उखड़ जाए और उन्हें भ्रष्टाचार करने का फिर से मौका मिले। भ्रष्ट तंत्र समस्याओं में लोगों को उलझाए रखना चाहता है ताकि लोग मूलभूत समस्याओं में उलझे रहे और उसे भ्रष्टाचार करने के नए-नए मौके मिलते रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा। मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422